95. Dr. Amardeep was invited as Keynote Speaker by Dr. B.R. Ambedkar Youth Society, Bandaheri (Hisar) on the occasion of 131st Birth Anniversary of great freedom fighter Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar on 14.04.202 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Baba Saheb Dr B R Ambedkar and His Contribution in the Indian Freedom Struggle".

jhajjarabhitaklive.com/2022/04/14/haryana-abhitak-news-14-04-22/

Haryana Abhitak News 14/04/22

डॉ. भीमराव अम्बेडकर भारतीय समाज को स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतो पर खड़ा करने का आजीवन प्रयास किया : डा. अमरदीप

झज्जर, 14 अप्रैल (अभीतक) : आज आजादी का अमृत महोत्सव के तहत डा. भीमराव अम्बेडकर यूथ सोसाइटी, बान्डाहेड़ी के तत्वावधान में बाबा साहेब भारत रत्न डा. भीमराव अम्बेडकर के 131 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं वक्ता प्रोफेसर डा. अमरदीप, राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ रहे। डा. अमरदीप ने कहा कि डा. अम्बेडकर का राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के मसीहा थे। उन्होंने भारतीय समाज को स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतो पर खड़ा करने का आजीवन प्रयास किया। उनका जीवन हर भारतीय को एक श्रेष्ठ जीवन जीने के अधिकार को सुरक्षित करने में लगा रहा और इसलिए उन्होंने कई सत्याग्रह और आन्दोलन जैसे महाड सत्याग्रह इत्यादि चलाये। उन्होंने सबसे अधिक शिक्षा पर जोर दिया और मानव मात्र की मुक्ति और उन्नति का आधार शिक्षा ही बताया। सोसाइटी के प्रधान जंगजीत बौद्ध ने कहा कि अम्बेडकर जयंती विश्व में सबसे अधिक मनाया जाने वाला त्योंहार है जो डा. अम्बेडकर के विचारों को आज भी प्रासांगिक घोषित करता है। सोसाइटी के उपाध्यक्ष सुनील कुमार ने कहा कि डा. अम्बेडकर ने समाज के सभी वर्गों के विकास के लिए कार्य किया और उनके विचारों पर चलकर हम एक नये और आधुनिक भारत का निर्माण कर सकते है। विक्रम मुवाल ने कहा कि डा. अम्बेडकर ने संविधान का निर्माण करके आधुनिक भारत की नींव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर शीला देवी, राजो देवी, रामरती और कृष्णा देवी ने अपने गीतों से कार्यक्रम की शोभा बढाई और साथ ही अम्बेडकर के विचारों के बारे में जागरूकता फ़ैलाने का कार्य भी किया। इस अवसर पर समस्त ग्रामवासियों ने बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके उन्हें श्रद्धान्जली दी।

96. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 163rd Martyrdom of great freedom fighter and revolutionary Tantya Tope on 18.04.2022 and delivered keynote address on "Tantya Tope: Forgotten Hero of 1857 Revolt."

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.04.2022

'तात्या टोपे ने स्वतंत्रता संग्राम को दी नई दिशा'

क्रांतिकारी तात्या टोपे के 163वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी तात्या टोपे के 163वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि तात्या टोपे ने 1857 के महान संग्राम को नई दिशा दी और क्रांति की ज्वाला को देश के कई हिस्सों में फैलाया। उन्होंने बताया कि 1814 में महाराष्ट्र के येवला पैतृक में जन्मे तात्या टोपे बिठुर में पेशवा नाना साहेब और मोरोपंत तांबे के संपर्क में आए। उनकी युद्धनीति बेजोड़ थी और यही कारण था कि 1857 के बाद वे अपने आखिरी पल तक लगातार युद्ध में ही रहे या फिर यात्रा करते रहे। 1857 के स्वाधीनता संग्राम के शुरुआती दिनों में तात्या टोपे की योजना काफी कामयाब रही। झांसी को बचाने के लिए पेशवा नाना साहब ने तात्या को जिम्मेदारी सौंपी और कानपुर के नजदीक काल्पी से तात्या टोपे अपनी सेना के साथ झांसी की ओर बढ़े। तात्या ये युद्ध नहीं जीत सके। इसके बाद तात्या टोपे ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। इतिहास प्राध्यापक अजय सिंह ने कहा कि 17 जून 1858 को ब्रिटेनी सैनिक ग्वालियर के नजदीक पहुंच गए और यहां पर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई। इससे युद्ध का परिदृश्य बदल गया और तात्या टोपे ग्वालियर छोड़ना पड़ा। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी व भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि ग्वालियर से निकलने के बाद तात्या टोपे चालाकी से बचते रहे।

ग्वालियर के पास शिवपुरी के जंगल में थे तब उनकी मुलाकात नरवर के राजा मानसिंह से हुई और मानसिंह ने उनके बारे में जानकारी ब्रिटिशों को दे दी।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी
19.04.2022

स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे का बलिदान दिवस मनाया, किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : सोमवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी तात्या टोपे के 163वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि तात्या टोपे ने 1857 के संग्राम को नई दिशा दी और क्रांति की ज्वाला को देश के कई हिस्सों में फैलाया। वर्ष 1814 में महाराष्ट्र के येवला में जन्मे तात्या टोपे बिठुर में पेशवा नाना साहेब के संपर्क में आए। उन्हें सैन्य नेतृत्व का कोई अनुभव नहीं था लेकिन उनकी युद्धनीति बेजोड़ थी और यही कारण था कि 1857 के बाद वे अपने अंतिम पल तक लगातार युद्ध में ही रहे या फिर यात्रा करते रहे। 1857 के संग्राम के दिनों में तात्या टोपे की योजना कामयाब रही। प्राध्यापक अजय सिंह, भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार, प्राचार्या डा. अनिता रानी ने भी तात्या टोपे के जीवन पर प्रकाश डाला।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 19-04-2022

'क्रांतिकारी तात्या टोपे ने संग्राम को नई दिशा दी'

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी तांत्या टोपे के 163वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि तात्या टोपे ने 1857 के महान संग्राम को नई दिशा दी और क्रांति की ज्वाला को देश के कई हिस्सों में फैलाया। 1814 में महाराष्ट्र के येवला पैतृक में जन्मे तांत्या टोपे बिठुर में पेशवा नाना साहेब और मोरोपंत तांबे के संपर्क में आए। हालांकि उन्हें उन्हें सैन्य नेतृत्व का कोई अनुभव नहीं था परन्तु उनके युद्धनीति बेजोड़ थी और यही कारण था कि 1857 के बाद वे अपने आख़िरी पल तक लगातार युद्ध में ही रहे या फिर यात्रा करते रहे। 1857 के स्वाधीनता संग्राम के शुरुआती दिनों में तात्या टोपे की योजना काफी कामयाब रही। झांसी को बचाने के लिए पेशवा नाना साहेब ने तात्या को जिम्मेदारी सोंपी और कानपुर के नजदीक काल्पी से तांत्या टोपे अपनी सेना के साथ तेजी से झांसी की ओर बढ़े। परंतु विष्णुभट गोड़से के यात्रा वृतांत 'माझा प्रवास' में लिखा है कि इस युद्ध में तात्या टोपे की सेना बहुत बहादुरी से लड़ी, लेकिन तात्या ये युद्ध नहीं जीत सके। इसके बाद तांत्या टोपे ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। प्राध्यापक अजय सिंह ने कहा कि 17 जून, 1858 को ब्रितानी सैनिक ग्वालियर के नजदीक पहुंच गए और यहां पर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुई। प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि ग्वालियर से निकलने के बाद तात्या टोपे ने चालाकी से बचते रहे।

97. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 164th Birth Anniversary of great freedom fighter and social reformer D.K. Karve on 19.04.2022 and delivered keynote address on "Social Reforms in India and Contribution of D.K. Karve."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 20-04-2022

स्वतंत्रता सेनानी धोंडो केशव कर्वे को किया याद

चरखी दादरी | गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी धोंडो केशव कर्वे के 164वें जन्म दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि कर्वे ने विधवा विवाह और महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में युगांतकारी भूमिका निभाई थी। वे भारत में महिला सशक्तिकरण आंदोलन के सशक्त एवं जीवंत कड़ी थे। इसी दिशा में उनके द्वारा मुंबई में स्थापित एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय भारत का प्रथम महिला विश्वविद्यालय है। 1858 में महाराष्ट्र में जन्मे कर्वे ने मुंबई विश्वविद्यालय से 1884 में गणित विषय में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात उन्हें एलफिंस्टन स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई। प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि 1891 में गोपालकृष्ण गोखले के निमंत्रण पर पुणे में फर्ग्युसन कॉलेज में प्राध्यापक बन गए। यहां 23 वर्ष तक सेवा करने के उपरांत 1914 में अवकाश ग्रहण किया।

98. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 112nd Martyrdom of great freedom fighter and revolutionary Laxman Anant Kanhere on 20.04.2022 and delivered keynote address on "Martyrdom of Laxman Anant Kanhere and Revolutionary Movement."

अमर उजाला, चरखी दादरी 21.04.2022

क्रांतिकारी अनंत लक्ष्मण कान्हेरे को किया याद

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी अनंत लक्ष्मण कान्हेरे का 112वां शहीदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को मुख्य वक्ता इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि अनंत लक्ष्मण कान्हेरे ने आजादी के आंदोलन के दौर में महाराष्ट्र में आंदोलन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। प्राचार्य अनीता रानी ने कहा कि 1891 में इंदौर में जन्मे अनंत कान्हेरे अपनी आरंभिक शिक्षा के बाद औरंगाबाद चले गए। 1905 के बंगाल विभाजन ने देशभर के क्रांतिकारियों को व्यथित करने के साथ उन्हें अंग्रेजी हुकूमत को सबक सिखाने का हौसला भरा। इसी दौर में अनंत कान्हेरे महाराष्ट्र में अभिनव भारत नामक गुप्त संस्था के सदस्य बन गए। 1909 में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सामग्री प्रकाशित करने के अभियोग में क्रांतिकारी गणेश सावरकर को आजीवन कारावास की सजा दी गई। इस घटना ने क्रांतिकारियों को उत्तेजित कर दिया और उन्होंने नासिक के जिला अधिकारी जैक्सन की हत्या करना का निश्चय किया। अनंत कान्हेरे ने इस काम करने का जिम्मा अपने ऊपर लिया। क्रांतिकारियों ने पूरी योजना तैयार की और 21 दिसंबर 1909 को जब जैक्सन मराठी नाटक देखने के लिए आ रहा था तभी अनंत कान्हेरे ने नाट्य-गृह के द्वार पर ही उसे अपनी गोली का निशाना बनाकर अंग्रेजी हुकूमत से बदला लिया। संवाद

दैनिक जागरण चरखी दादरी 21.4.2022

क्रांतिकारी अनंत लक्ष्मण का बलिदान दिवस मनाया

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी अनंत लक्ष्मण के 112वें बलिदान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि अनंत लक्ष्मण कन्हेरे ने भारत की आजादी के आंदोलन के दौर में महाराष्ट्र के क्रांतिकारी आंदोलन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

1891 में इंदौर, केंद्रीय प्रांत में जन्मे अनंत कन्हेरे अपनी आरंभिक शिक्षा के बाद औरंगाबाद महाराष्ट्र चले गए। 1905 के बंगाल विभाजन ने देश के क्रांतिकारियों को व्यथित करने के साथ साथ उनमें अंग्रेजी हुकूमत को सबक सिखाने का हौसला दिया। अनन्त कन्हेरे महाराष्ट्र में अभिनव भारत नामक गुप्त संस्था का सदस्य बने। 1909 में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सामग्री प्रकाशित करने के अभियोग में क्रांतिकारी गणेश सावरकर को आजन्म कारावास की सजा दी गई और जैक्सन ने इस कार्य को पूरा करने के लिए ताकत झोंक रखी थी। उन्होंने नासिक के जिला अधिकारी जैक्सन का वध करके बदला लेने का निश्चय कर लिया।

99. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 400th Prakash Parva of 9th Sikh Guru: Guru Tegh Bahadur on 23.04.2022 and delivered keynote address on "Teachings of Guru Tegh Bahadur and His Legacy in the Indian Freedom Struggle."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 24-04-2022

झज्जर

बिरोहड़ में गुरु तेग बहादुर के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम

गुरु तेग बहादुर का जीवन मानवता, सद्भाव और शांति का संदेश देता है

भास्कर न्यूज | झज्जर

बिरोहड़ गांव स्थित राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग ने सिख धर्म के नौवें गुरु तेग बहादुर के 400वें प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम किया। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के जरिए कार्यक्रम में मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु तेग बहादुर का जीवन हमें मानवता, सद्भाव और शांति का संदेश और अधर्म व बुराई का डटकर सामना करने का हौसला देता है। गुरु तेग बहादुर ने शरण में आए हुए फरियादियों के लिए अपने प्राणों को हंसते हंसते कुर्बान करके शहादत की नई मिसाल पेश की। मुगल शासक औरंगजेब के समय वर्ष 1675 में गुरु तेग बहादुर के दरबार श्री आनंदपुर साहिब में पंडित किरपा राम दत्त के नेतृत्व में 16 पंडितों के एक प्रतिनिधिमंडल ने फरियाद करने पहुंचा था। उन्होंने कश्मीर में जबरन धर्म परिवर्तन, धार्मिक समारोहों पर प्रतिबंध, धार्मिक मंदिरों की तोड़फोड़ ओर जनसंहार के बारे में बताया।

झज्जर. बिरोहड़ गांव के राजकीय कॉलेज में गुरु के बारे में विचार व्यक्त करते शिक्षकगण।

गुरु साहिब ने अत्याचारों से निजात दिलाने के लिए उठाई थी आवाज

गुरु साहिब ने उन्हें विश्वास दिलाया था कि उनके खिलाफ हो रहे अत्याचारों से निजात दिलाने के लिए वह स्वयं बादशाह औरंगजेब से बात करेंगे। गुरु तेग बहादुर साहिब 10 जुलाई वर्ष 1675 को चक्क नानकी (आनंदपुर साहिब) से भाई मतिदास, भाई सती दास और भाई दयाला के साथ दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन औरंगजेब की सेना ने सभी को बंदी बना लिया। धर्म परिवर्तन से मना करने पर खोफनाक यातनाएं देकर तीनों (भाई मतिदास, भाई सती दास और भाई दयाला) को गुरु साहिब के सामने शहीद कर दिया।

मुगल शासक ने गुरु पर किए थे अनेक अत्याचार

कॉलेज प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि मुगल शासक ने गुरु तेग बहादुर पर भी अनेक व अनंत अत्याचार किए। अंत में 24 नवंबर वर्ष 1675 को गुरु तेग बहादुर मानवता, सद्भाव और शांति की स्थापना के प्रयास में शहीद हो गए। इसी शहादत के कारण उन्हें हिंद की चादर आयर धर्म की चादर जैसी महान उपाधियों से सुशोभित किया।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 24-04-2022

राजकीय कॉलेज में सिख धर्म के नौवें गुरु के 400वें प्रकाश पर्व पर हुआ कार्यक्रम

गुरु तेग बहादुर का जीवन हमें मानवता सद्भाव और शांति के बारे में देता है संदेश

शहादत के कारण उन्हें हिंद की चादर आयर धर्म की चादर जैसी महान उपाधियों से सुशोभित किया

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सिख धर्म के नौवें गुरू तेग बहादुर के 400वें प्रकाश पर्व पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि गुरु तेग बहादुर का जीवन हमें मानवता, सद्भाव और शांति का संदेश एवं अधर्म और बुराई का डटकर सामना करने का हौसला देता है।

गुरु तेग बहादुर ने शरण में आए हुए फरियादियों के लिए अपने प्राणों को हंसते हंसते कुर्बान करके शहादत की नई मिसाल पेश की। मुग़ल शासक औरंगजेब के समय 1675 ई. में गुरू तेग बहादुर के दरबार श्री आनंदपुर साहिब में पंडित किरपा राम दत्त के नेतृत्व में 16 पंडितों के एक प्रतिनिधिमंडल ने फ़रियाद करने पहुंचा था और उन्होंने कश्मीर में जबरन धर्म परिवर्तन, धार्मिक समारोहों पर प्रतिबंध, धार्मिक मंदिरों की तोड़फोड़ ओर जनसंहार के बारे में बताया। गुरू साहिब ने उन्हें विश्वास दिलाया कि उनके खिलाफ हो रहे अत्याचारों से निजात दिलाने के लिए वह स्वयं बादशाह औरंगजेब से बात करेंगे। गुरू तेग बहादुर साहिब 10 जुलाई, 1675 ई. को चक्क नानकी (आनंदपुर साहिब) से भाई मतिदास, भाई सती दास और भाई दयाला जी के साथ दिल्ली के लिए रवाना हुए।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करतीं प्राचार्या डॉ. अनीता।

परंतु औरंगजेब की सेना ने सभी को बंदी बना लिया और धर्म परिवर्तन से मना करने पर खोफनाक यातनाएं देकर तीनों (भाई मतिदास, भाई सती दास और भाई दयाला जी) को गुरु साहिब के सामने शहीद कर दिया गया।

प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि मुग़ल शासक ने गुरु तेग बहादुर पर भी अनेक एवं अनंत अत्याचार किए और अंत में 24 नवम्बर 1675 को गुरु तेग बहादुर मानवता, सद्भाव और शांति की स्थापना के प्रयास में शहीद हो गए। इसी शहादत के कारण उन्हें हिंद की चादर आयर धर्म की चादर जैसी महान उपाधियों से सुशोभित किया गया।

100. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 164th Martyrdom of great freedom fighter and revolutionary Veer Kunwar Singh on 25.04.2022 and delivered keynote address on "the Loin of Bihar: Veer Kunwar Singh and His Contribution in Freedom Struggle with special reference to Great War of 1857"

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 26-04-2022

चरखी दादरी

महान क्रांतिकारी बाबू कुंवर सिंह के 164वें शहीदी दिवस पर कॉलेज में कार्यक्रम

'बिहार का शेर' के नाम से जानते थे लोग

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी बाबू कुंवर सिंह के 164वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साक्षी मलिक राजकीय महिला महाविद्यालय मोखरा के प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि 1857 के महान समर में बाबू कुंवर सिंह ने अद्वितीय योगदान रहा है और उन्हें बिहार का शेर के नाम से जाना जाता है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि जगदीशपुर के बाबू वीर कुंवर सिंह 80 वर्ष की उम्र में भी लड़ने तथा विजय हासिल करने का माद्दा रखते थे और अपने

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सेमिनार को संबोधित करते वक्ता।

ढलते उम्र और बिगड़ते सेहत के बावजूद भी उन्होंने कभी भी अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके बल्कि उनका डटकर सामना किया। 1777 में बिहार के जगदीशपुर गांव में जन्मे कुंवर सिंह एक विशाल जागीर के मालिक थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बाबू कुंवर सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए अपना अभियान आरा में जेल तोड़ कर कैदियों की मुक्ति तथा खजाने पर कब्जे से प्रारंभ किया। कुंवर सिंह ने दूसरा मोर्चा बीबीगंज में खोला जहां 2 अगस्त, 1857 को अंग्रेजों के छक्के छुड़ाए और बीबीगंज और बिहिया के जंगलों में घमासान लड़ाई हुई। वहाँ पर अंग्रजों ने जगदीशपुर पर भयंकर गोलाबारी की और सितंबर 1857 में वे रीवा, बाँदा, काल्पी, लखनऊ गये। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि जब कुंवर सिंह बिहार की ओर लौटने लगे और जब वे जगदीशपुर जाने के लिए गंगा पार कर रहे थे तभी अंग्रेजी सेना की एक गोली उनकी बांह में आकर लगी परंतु उन्होंने अपनी तलवार से कलाई काटकर नदी में प्रवाहित कर दी और अंग्रेजी सेना को डटकर सामना किया और अंग्रेजी सेना को पराजित करके 23 अप्रैल, 1858 को जगदीशपुर पहुंचे। इसमें वह बुरी तरह से घायल हो गये और 1857 की क्रांति के इस महान नायक का आखिरकार अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुए 26 अप्रैल, 1858 को शहीद हो गये। इस अवसर पर जितेन्द्र और पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

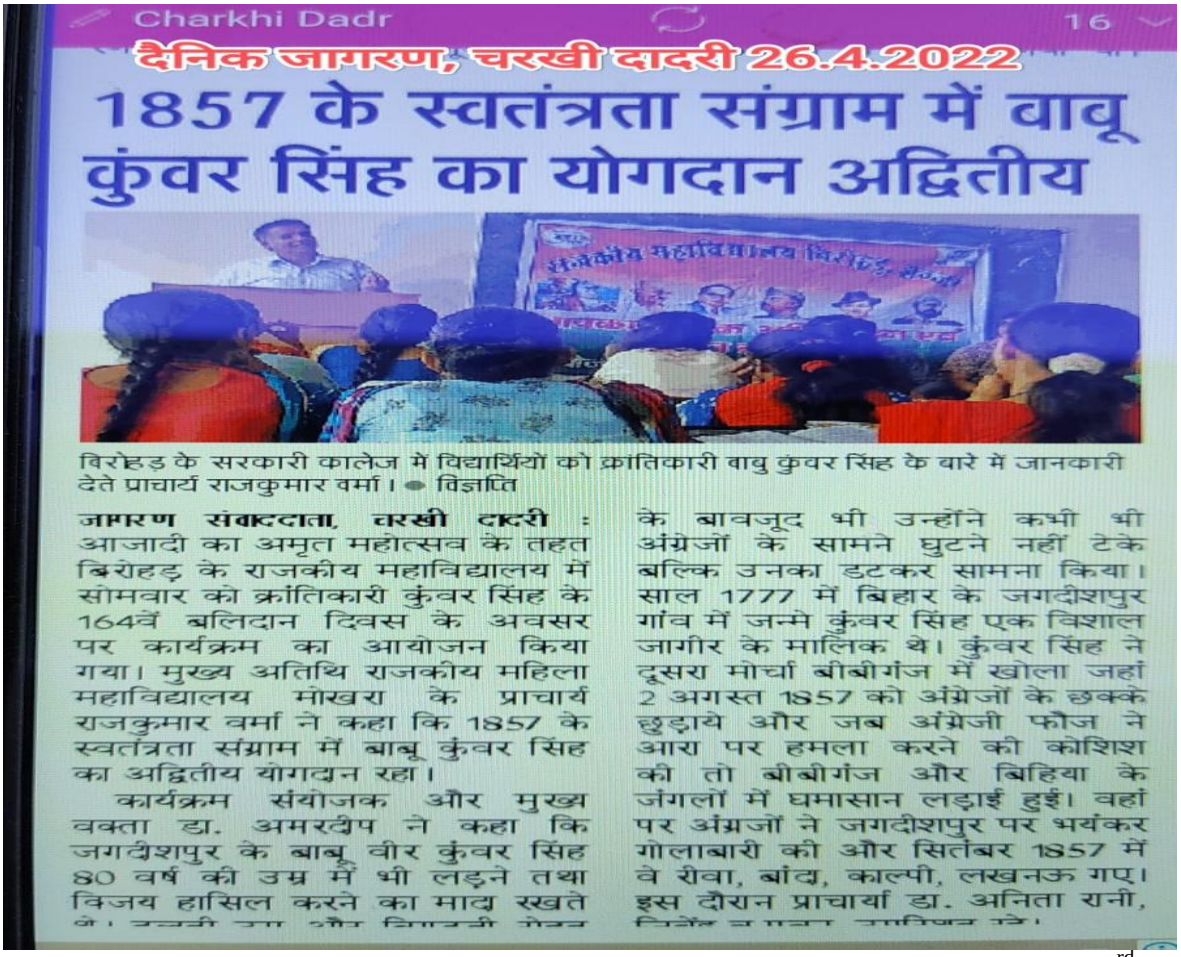

Charkhi Dadr

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 26.4.2022

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बाबू कुंवर सिंह का योगदान अद्वितीय

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को क्रांतिकारी बाबु कुंवर सिंह के बारे में जानकारी देते प्राचार्य राजकुमार वर्मा। • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव के तहत बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सोमवार को क्रांतिकारी कुंवर सिंह के 164वें बलिदान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राजकीय महिला महाविद्यालय मोखरा के प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में बाबू कुंवर सिंह का अद्वितीय योगदान रहा।

कार्यक्रम संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि जगदीशपुर के बाबू वीर कुंवर सिंह 80 वर्ष की उम्र में भी लड़ने तथा विजय हासिल करने का माद्दा रखते के बावजूद भी उन्होंने कभी भी अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके बल्कि उनका डटकर सामना किया। साल 1777 में बिहार के जगदीशपुर गांव में जन्मे कुंवर सिंह एक विशाल जागीर के मालिक थे। कुंवर सिंह ने दूसरा मोर्चा बीबीगंज में खोला जहां 2 अगस्त 1857 को अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये और जब अंग्रेजी फौज ने आरा पर हमला करने की कोशिश की तो बीबीगंज और बिहिया के जंगलों में घमासान लड़ाई हुई। वहां पर अंग्रजों ने जगदीशपुर पर भयंकर गोलाबारी की और सितंबर 1857 में वे रीवा, बांदा, काल्पी, लखनऊ गए। इस दौरान प्राचार्या डा. अनिता रानी,

101. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 53rd Death Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Yogesh Chandra Chaterji on 28.04.2022 and delivered keynote address on "Yogesh Chandra Chaterji: Revolutionary Movement and Indian Freedom Struggle."

अमर उजाला, चरखी दादरी 29.4.22

आयोजन — आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम, मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप बोले -

क्रांतिवीर योगेशचंद्र चटर्जी ने कारावास में गुजारे थे 24 वर्ष

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी योगेशचंद्र चटर्जी की 53 वीं पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के संघर्ष में क्रांतिवीर योगेशचंद्र चटर्जी ने 24 वर्ष कारावास में और इसमें से ढाई वर्ष भूख हड़ताल में गुजारे, जो उनकी अदम्य और अनंत देशभक्ति का परिचायक है। योगेशचंद्र चटर्जी का जीवन देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने की गौरवमयी गाथा है। 1895 में बंगाल के मावदिया गांव में जन्मे योगेश किशोरावस्था में ही प्रमुख क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति से जुड़ गये और 10 साल की आयु में 1905 के बंगाल विभाजन विरोधी स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया। क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण अंग्रेजी सरकार ने 1916 में योगेश चटर्जी को गिरफ्तार किया और क्रांतिकारियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अमानुषिक अत्याचार किये। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में नवयुवकों को इसमें भाग लेने को तैयार किया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि स्वतंत्र भारत में उनका झुकाव कांग्रेस की ओर हो गया और वे उत्तरप्रदेश से राज्य सभा के सांसद चुने गये।

उन्होंने समाजवादी विचारों का प्रसार एवं मजदूरों की भलाई के कार्य करने में अपना जीवन बिताया। 28 अप्रैल 1969 में इनका देहांत हो गया।

नाटक में दिखेगी गांव रोहनात के वीरों की गाथा : संदीप

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव की शृंखला में 29 अप्रैल को दोपहर एक बजे स्थानीय जनता कॉलेज के सभागार में दास्तान ए रोहनात नाटक का मंचन किया जाएगा, जिसमें कलाकारों द्वारा देश की आजादी के लिए चलाए गए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अपना अहम योगदान देने वाले गांव रोहनात की वीरगाथा प्रस्तुत की जाएगी। जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी संदीप कुमार ने बताया कि दादरी के उपायुक्त प्रदीप गोदारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करेंगे। उन्होंने जनता कॉलेज के सभागार में आयोजित होने वाले दास्तान ए रोहनात नाटक को विशेषकर युवाओं से देखने की अपील की। संवाद

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 29-04-2022

चटर्जी का जीवन विदेशी दास्तां से मुक्त कराने को रहा समर्पित

स्वतंत्रता सेनानी योगेश चंद्र चटर्जी की 53वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी योगेश चंद्र चटर्जी की 53वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के संघर्ष में क्रांतिवीर योगेश चंद्र चटर्जी ने 24 वर्ष कारावास में और इसमें से ढाई वर्ष भूख हड़ताल में गुजारे जो उनकी अदम्य और अनंत देशभक्ति का परिचायक है।

योगेश चटर्जी का जीवन देश को विदेशी दास्तां से मुक्त कराने की गौरवमय गाथा है। 1895 में बंगाल के गावदिया गांव में जन्मे योगेश किशोरावस्था में ही प्रमुख क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति से जुड़ गए और 10 साल की आयु में 1905 के बंगाल विभाजन विरोधी स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया। अंग्रेजी सरकार ने 1916 में योगेश चटर्जी को गिरफ्तार किया और क्रांतिकारियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अमानुषिक अत्याचार किए, यहां तक इनपर मानव मलमूत्र इत्यादि डालकर व अन्य शारीरिक और मानसिक प्रताड़नाएं देकर इन्हें तोड़ने की कोशिश की गई परन्तु चटर्जी ने एक भी शब्द अपनी जुबान पर नहीं लाए अन्यथा बंगाल से क्रांतिकारी आन्दोलन का खात्मा हो सकता था। अंत में 1920 में इन्हें आजाद कर दिया गया। 1924 में कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना में योगेश चन्द्र चटर्जी ने रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद और शचींद्रनाथ सान्याल आदि के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि स्वतन्त्र भारत में उनका झुकाव कांग्रेस की ओर हो गया और वे उत्तर प्रदेश से राज्य सभा के सांसद चुने गए और उन्होंने समाजवादी विचारों का प्रसार एवं मजदूरों की भलाई के कार्य करने में अपना जीवन बिताया और 28 अप्रैल 1969 में इनका देहांत हो गया परन्तु अपने पीछे राष्ट्रभक्ति की कभी ना मिटने वाली मिसाल छोड़ गए।

102. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 223rd Martyrdom of great ruler and revolutionary king Tipu Sultan on 04.05.2022 and delivered keynote address on "Tipu Sultan and East India Company."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 05-05-2022

सेमीनार • टीपू सुल्तान के 223वें शहीदी दिवस पर राजकीय कॉलेज में विद्यार्थियों ने किया कार्यक्रम

टीपू सुल्तान मिसाइलमेन के रूप में विख्यात, उनके रॉकेटों का नहीं था अंग्रेजी सेना के पास कोई जवाब

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी शासक टीपू सुल्तान के 223वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि टीपू सुल्तान दुनिया का पहले मिसाइलमेन के रूप में विख्यात है।

उनके रॉकेटों का अंग्रेजों के पास कोई जवाब नहीं था। प्लासी की लड़ाई के बाद कुकुरमुत्ता की तरह फैलते अंग्रेजों को भारत के लिए खतरा मानने वाला और इन्हें भारत से बाहर निकालने को तत्पर होने वाला पहला शासक टीपू सुल्तान ही था।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को अवगत करवाते वक्ता।

1782 में अपने पिता हैदरअली की मृत्यु के बाद शासक बनने वाले टीपू अपनी जनता में खासे प्रिय थे और यही कारण था कि उस समय भारत में सर्वाधिक समृद्ध प्रांतों में मैसूर की गिनती होती थी। अंग्रेजी राज यह समझ चुका था कि दक्षिण भारत में मैसूर को समाप्त किए बिना उनका सिक्का नहीं चल सकता है। इसलिए उनके मैसूर के खिलाफ एक के बाद एक चार युद्ध किए परंतु अंग्रेजों को भारत में पहली बार हराने वाले राजा कोई और नहीं बल्कि मैसूर के शासक हैदरअली ही था जिसने प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध में अंग्रेजों को हराकर उनकी मद्रास प्रेसिडेंसी तक सीमित कर दिया था। परंतु बाद में अंग्रेज ने अन्य रियासतों को मैसूर के खिलाफ उकसाकर हैदरअली और टीपू सुल्तान के लिए मुसीबतें खड़ी कर दी और 1799 में लड़े गये चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध अंग्रेजों ने षड्यंत्र के जरिये टीपू सुल्तान के सेना को गुमराह किया।

प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि इस लड़ाई में टीपू ने अधिकतर लड़ाई समान्य सैनिक की तरह पैदल ही लड़ी, लेकिन जब उनके सैनिकों का मनोबल गिरने लगा तो तब वो घोड़े पर सवार हो कर उनकी हिम्मत बढ़ाने की कोशिश करने लगे।

गोली लगने और तलवारों के कई वारों से घायल होने पर टीपू की मृत्यु होने पर भी उनकी सेना अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ लड़ती रही, ऐसी निष्ठा और कर्तव्य परायणता बहुत कम देखने को मिलती है। इस अवसर पर जितेन्द्र और पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

होगा। ट्रायल में 12 साल से लेकर 16 साल क्लब चो. खेमचंद स्टेडियम बुसान को को जूनियर एथलीट को राष्ट्रीय स्तर का

तक की ... पदक है। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 5.5.22

कार्यक्रम में टीपू सूल्तान के बारे में बताया

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत आयोजित हुआ कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में टीपू सुलतान के 223 वें शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने की।

मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि टीपू सुलतान दुनिया के पहले मिसाइल मैन के रूप में विख्यात रहे हैं। 1782 में अपने पिता हैदर अली की मृत्यु के बाद शासक बने टीपू जनता में खासे लोकप्रिय थे। यही कारण था कि उस समय भारत में सर्वाधिक समृद्ध प्रांतों में मैसूर की गिनती होती थी। अंग्रेजी राज यह समझ चुका था कि दक्षिण भारत में मैसूर को समाप्त किये बिना उनका राज नहीं चल सकता, इसलिए मैसूर के खिलाफ एक के बाद एक चार युद्ध किए परंतु अंग्रेजों को भारत में पहली बार हराने वाले राजा कोई और नहीं बल्कि मैसूर के शासक हैदर अली ही थे। जिसने प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध में अंग्रेजों को हराकर उनको मद्रास प्रेसिडेंसी तक सीमित कर दिया था। प्राचार्य डॉ. अनीता रानी ने कहा कि इस लड़ाई में टीपू ने सामान्य सैनिक की तरह पैदल ही लड़ी लेकिन जब उनके सैनिकों का मनोबल गिरने लगा तो तब वो घोड़े पर सवार हो कर उनकी हिम्मत बढ़ाने की कोशिश करने लगे। टीपू की मृत्यु होने पर भी उनकी सेना अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ लड़ती रही। इस अवसर पर जितेंद्र और पवन कुमार आदि उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्ति पर संस्कृत प्रवक्ता कृष्ण कुमार को दी विदाई

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। गांव इमलोटा स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत रहे कृष्ण कुमार शास्त्री 34 साल के अध्यापन कार्य के बाद सेवानिवृत्ति हो गए। उनकी सेवानिवृत्ति पर स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डिप्टी डीईओ जलधीर सिंह कलकल ने कृष्ण शास्त्री के सरकारी सेवाकाल की सराहना की।

कृष्ण शास्त्री ने इमलोटा कन्या विद्यालय में ग्रामीणों के सहयोग से दो दो वाटर कूलर लगवाए। कक्षाओं में 100 बेंच उपलब्ध करवाए व पुस्तकालय कक्ष की स्थापना करवाई गई। कमरों में पंखों की व्यवस्था व शौचालयों का निर्माण करवाने में सहयोग किया।

इस अवसर पर एईईओ सुनील सांगवान, हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ के जिला सचिव सुंदरपाल फौगाट, राज सिंह, बसंत, प्रदीप, हितैष, मनजीत, भारत विकास परिषद के सचिव जय सिंह, भीम सिंह, नरेश कुमार, नवीन कुमार, कैप्टन सूरजभान सिंह, प्राचार्य चित्रलेखा, तनवीर, अरुण कुमार, मोहनलाल, सरिता देवी, अर्चना, संजीता, सुशीला देवी, सुरेश देवी, सुनीता, मीना और सीमा आदि स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

103. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 119th Birth Anniversary of great freedom fighter T.S. Avinashilingam Chettiyar on 05.05.2022 and delivered keynote address on "Role of T.S. Avinashilingam Chettiyar in the Indian Freedom Struggle."

सिटी हलचल दैनिक जागरण, चरखी दादरी 6.5.2022

स्वतंत्रता सेनानी तिरुप्पुर को किया याद

बिरोहड़ में विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानी तिरुप्पुर सुब्रहमण्य अविनाशीलिंगम चेट्टियार के बारे में जानकारी डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी तिरुप्पुर सुब्रहमण्य अविनाशीलिंगम चेट्टियार के 119वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि तिरुप्पुर सुब्रहमण्य अविनाशीलिंगम चेट्टियार दक्षिण भारत के कर्मठ राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी नेता थे। 5 मई 1903 को तिरुप्पुर मद्रास में जन्मे चेट्टियार युवा अवस्था में 1926 से ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए और सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें चार बार गिरफ्तार भी किया गया था। जब 1944 में उनकी अंतिम जेल की अवधि समाप्त हुई तो उन्होंने प्रांतीय राजनीति में प्रवेश किया और 1946 में मद्रास विधान परिषद के लिए चुने गए। उन्होंने 1946 से 1949 तक मद्रास प्रेसीडेंसी में शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्हें भारतीय समाज में सुधार लाने का श्रेय भी जाता है। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी सहायक प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह व जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे। (जासं)

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 06-05-2022

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता।

चेट्टियार को तमिल विश्वकोश के निर्माण का दिया जाता है श्रेय

राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी सुब्रह्मण्य के 119वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी तिरुप्पुर सुब्रह्मण्य अविनाशीलिंगम चेट्टियार के 119वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि तिरुप्पुर सुब्रह्मण्य अविनाशीलिंगम चेट्टियार दक्षिण भारत के कर्मठ राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी नेता थे। 5 मई 1903 को तिरुपुर, मद्रास प्रेसीडेंसी में जन्में अविनाशीलिंगम चेट्टियार ने युवावस्था में 1926 से ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए और सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें चार बार 1930, 1932, 1941 और 1942 में गिरफ्तार किया गया था। जब 1944 में उनकी अंतिम जेल की अवधि समाप्त हुई, तो उन्होंने प्रांतीय राजनीति में प्रवेश किया और 1946 में मद्रास विधान परिषद के लिए चुने गए। उन्होंने 1946 से 1949 तक मद्रास प्रेसीडेंसी के शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया और तमिल को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रारंभ करवाने वालों में ये एक थे। साथ ही उन्हें पहले तमिल विश्वकोश के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है। उन्हें भारतीय समाज में सुधार लाने का श्रेय भी दिया जाता है। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि आजादी के पश्चात वे राज्य सभा के सदस्य भी रहे। अविनाशीलिंगम का 88 वर्ष की आयु में 21 नवंबर 1991 को निधन हो गया परन्तु अपने साथ संघर्ष और देशभक्ति की अद्भुत देन छोड़ गये। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह और जितेन्द्र इत्यादि उपस्थित रहे।

104. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 143rd Birth Anniversary of great social reformer Swami Achhutanand on 06.05.2022 and delivered keynote address on "Role of Swami Acchutanand in Social Reform in India."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 07-05-2022

विद्यार्थियों में देशभक्ति का संचार करना ही हमारा लक्ष्य

स्वतंत्रता सेनानी अछुतानंद हरिहर की 143वीं जयंती पर कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 100वां कार्यक्रम महान स्वतंत्रता सेनानी अछुतानंद हरिहर की 143वीं जयंती पर आयोजित किया गया।

प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि इस राष्ट्रीय मूल्य की अमृत श्रृंखला को डॉ. अमरदीप ने अपनी अटूट निष्ठां एवं अथक प्रयासों से सफल बनाया है। 100वां कार्यक्रम करवाने का आंकड़ा छूना, वास्तव में महाविद्यालय और डॉ. अमरदीप के लिए गौरव की बात है। डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी के संघर्ष की दास्तां की इस महान श्रृंखला के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता और देशभक्ति के मूल्यों का संचार करना ही हमारा लक्ष्य रहा है। 13 मार्च 2021 से लेकर आज तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन के प्रत्येक पक्ष से जुड़े स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान के बारे में विद्यार्थियों को सचेत किया गया। डॉ. अमरदीप ने बताया कि स्वामी अछुतानंद हरिहर ने औपनिवेशिक काल में भारतीय नवजागरण आंदोलन को नई दिशा दी और राष्ट्रीयता का संचार करने में विशेष योगदान दिया। 6 मई 1879 में संयुक्त प्रांत में जन्में स्वामी अछुतानंद ने 1905 से 1912 तक आर्य समाज के प्रचारक रहे। 1913 में उत्तर भारत की पहली दलित द्वारा रचित पुस्तक 'हरिहर भजन माला' पुस्तक के माध्यम से उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को उकेरा। 1922 में आदि हिंदू आन्दोलन खड़ा करके समाज में परिवर्तन की लहर को जन्म दिया।

इसी आंदोलनकारी रुख के कारण डॉ. भीमराव आंबेडकर ने उनके लिए स्वामी जी को अनेकानेक प्रणाम, एवं आपका कृपाभिलाशी जैसे शब्दों का कई बार प्रयोग किया। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरेन्द्र सिंह, सवीन, जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया, अजय सिंह, राजेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

कारण रहा है।

अमर उजाला, चरखी दादरी 7.5.22

अछूतानंद नें भारतीय नवजागरण आंदोलन को दी नई दिशा : अनिता

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए प्राचार्य डॉ. अनिता रानी। संवाद

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में 100वां कार्यक्रम स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद हरिहर की 143वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. अनिता रानी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की व डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष सहयोग किया।

डॉ. अनिता रानी ने बताया कि स्वामी अछूतानंद हरिहर ने औपनिवेशिक काल में भारतीय नवजागरण आंदोलन को नई दिशा दी और राष्ट्रीयता का संचार करने में विशेष योगदान दिया। छह मई 1879 में संयुक्त प्रांत (पंजाब-हरियाणा) में जन्मे स्वामी अछूतानंद आनंद 1905 से 1912 तक आर्य समाज के प्रचारक रहे। अंग्रेजी के प्रोफेसर डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों को आजादी का वास्तविक मूल्य और संघर्ष से परिचित करवाया गया है। इस अवसर पर इतिहास के सहायक प्रोफेसर सवीन, सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरेंद्र सिंह, जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया, अजय सिंह, राजेश कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

105. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 100th Mahaparinirvan Diwas of Shahuji Maharaja and 161st Birth Anniversary of great freedom fighter and writer Guru Ravindra Nath Tagore on 07.05.2022 and delivered keynote address on "Life and Message of Shahuji Maharaj and Guru Ravindra Nath Tagore."

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 08-05-2022

का हौसला बढ़ाया।

महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक साहूजी महाराज का 100वां महा परिनिर्वाण दिवस मनाया

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज में हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

बिरोहड़ कॉलेज में व्याख्यान के दौरान मौजूद छात्र-छात्राएं।

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक साहूजी महाराज के 100 वें महा परिनिर्वाण दिवस एवं महाकवि गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर के 161वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि साहूजी महाराज ने आधुनिक भारत में समतामूलक समाज स्थापना के अग्रणी थे वहीं रविन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास को नई दिशा दी। कोल्हापुर के महाराज छत्रपति साहू ने समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आजीवन कार्य किया। उन्होंने अछूत और पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए शिक्षा के द्वार खोले, छात्रावासों का निर्माण करवाया एवं साथ ही 1902 में अपने राज्य में उनके लिए नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था भी की जिससे इस वर्ग के विकास हो सके और वे राष्ट्र निर्माण में अपना समूचा योगदान दे सकें। साहूजी महाराज के शासन के दौरान बाल विवाह पर प्रतिबंध और अंतरजातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में समर्थन की आवाज उठाई थी।

ज्योतिबा फुले से प्रभावित साहूजी महाराज ने डॉ. अम्बेडकर को उच्च शिक्षा के छात्रवृति एवं उनके मूकनायक समाचार पत्र के आर्थिक सहायता प्रदान की। कार्यक्रम के दूसरे भाग में डॉ. अमरदीप ने कहा कि देशभक्ति की भावना का दूसरा नाम रविन्द्र नाथ टैगोर हैं। उनके द्वारा रचित राष्ट्रगान 'जन-गन-मन' हमेशा आज भी उनके योगदान को रेखांकित करता है जिस्की गूंज हर कार्यक्रम में रहती है। बंगाल विभाजन के समय उनके द्वारा रचित 'आमार शोनार बांग्ला' के गीत के माध्यम से राष्ट्रवादी भावनाओं का तूफान खड़ा कर दिया था। 1913 में गीतांजली काव्य रचना से नोबेल पुरस्कार जीतकर भारतीयों की साहित्यिक प्रतिभा का लोहा वैश्विक स्तर मनवाया था। जलियांवाला बाग नरसंहार से आक्रोशित होकर उन्होंने सर की उपाधि लौटा दी थी। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, डॉ. रीना इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला 8.5.22

साहूजी महाराज के 100वें महापरिनिर्वाण दिवस पर रखे विचार

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक साहूजी महाराज के 100वें महापरिनिर्वाण दिवस एवं महाकवि गुरु रविंद्रनाथ टैगोर के 161वें जन्म दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि साहूजी महाराज आधुनिक भारत में समतामूलक समाज स्थापना के अग्रणी थे। टैगोर ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास व शिक्षा को नई दिशा दी। कोल्हापुर के महाराज छत्रपति साहू ने समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आजीवन कार्य किया। उन्होंने अछूत और पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिए शिक्षा के द्वार खोले। छात्रावासों का निर्माण करवाया। साहूजी महाराज के शासन के दौरान बाल विवाह पर प्रतिबंध और अंतरजातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में समर्थन की आवाज उठाई थी। टैगोर ने 1913 में गीतांजलि काव्य रचना से नोबेल पुरस्कार जीतकर भारतीयों की साहित्यिक प्रतिभा का लोहा वैश्विक स्तर मनवाया था। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, डॉ. रीना आदि उपस्थित रहे। संवाद

106. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 482nd Birth Anniversary Maharana Pratap and 156th Birth Anniversary of great freedom fighter Gopal Krishana Gokhle on 09.05.2022 and delivered keynote address on "Impact of Maharaj Pratap and Gopal Krishana Gokhle in the Indian Freedom Struggle".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 10-05-2022

महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर अमिट छाप छोड़ी

482वीं जयंती पर राजकीय कॉलेज में किया कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के कॉलेज में विद्यार्थियों को संबोधित करते डॉ. अमरदीप।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महाराणा प्रताप की 482वीं जयंती और महान स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले के 156वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर अमिट छाप छोड़ी है।

विदेशी सत्ता के सामने घुटने टेकने के बजाय अपने वजूद को स्वतंत्र रखने और इसके लिए अंतिम सांस तक अटूट संघर्ष की भावना का स्त्रोत महाराणा प्रताप ही दिखाई पड़ते है जो हमें क्रांतिकारी आंदोलन में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। इसके साथ साथ स्वाधीनता संग्राम के समय भारतीय जनमानस को महाराणा प्रताप के जीवन ने बड़ी से बड़ी ताकत का सामना बुलंद हौंसलों से करना सिखाया।

कार्यक्रम के दूसरे भाग में डॉ. अमरदीप ने कहा कि गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी का मार्गदर्शक बनकर स्वतंत्रता आंदोलन को नया आयाम दिया। गोखले ने 1905 में सामाजिक और मानवीय विकास के उद्देश्य से सर्वेंट ऑफ़ इंडिया सोसाइटी की नींव रखी जिसके माध्यम से शिक्षा के विकास और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज बुलंद की गई। प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि गोखले ने महात्मा गांधी को भारत भ्रमण करने का सन्देश दिया और साथ ही उन्होंने ब्रिटिश सत्ता द्वारा किये जा रहे शोषण के खिलाफ भी आवाज उठाई। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 10.05.2022

महाराणा प्रताप की जयंती पर रही

प्रतियोगिता, गोष्ठियां आयोजित, वक्ताओं ने कहा महाराणा प्रताप ने देश

संवाद न्यूज एजेंसी

झज्जर/बहादुरगढ़/सालहावास। महाराणा प्रताप और स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले की जयंती पर जिले भर के स्कूल कालेजों में कार्यक्रमों की धूम रही। प्रतियोगिताओं और व्याख्यानों का आयोजन हुआ। इसमें वक्ताओं ने कहा कि महाराणा प्रताप से देश के लिए अंतिम समय तक संघर्ष किया।

महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर छोड़ी अमिट छाप

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महाराणा प्रताप जयंती और महान स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले के जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर अमिट छाप छोड़ी है। विदेशी सत्ता के सामने घुटने टेकने के बजाय अपने वजूद को स्वतंत्र रखने और इसके लिए अंतिम सांस तक संघर्ष किया।

कार्यक्रम के दूसरे भाग में डॉ अमरदीप ने कहा कि गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गांधी का मार्गदर्शक बनकर स्वतंत्रता आंदोलन को नया आयाम दिया।भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि गोखले ने महात्मा गांधी को भारत भ्रमण करने का संदेश दिया और साथ ही उन्होंने ब्रिटिश सत्ता की ओर से किये जा रहे शोषण के खिलाफ भी आवाज उठाई। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डॉ नरेंद्र सिंह, पवन कुमार के अलावा अन्य उपस्थित रहे।

महाराणा प्रताप व गोपाल कृष्ण गोखले को याद करते लोग। संवाद

गुभाना में गोखले की जयंती मनाई

बादली। गांव गुभाना में लोकहित पुस्तकालय में लोकहित समिति ने महाराणा प्रताप और गोपाल कृष्ण गोखले की जयंती मनाई। अध्यक्ष नरेश कौशिक ने बताया कि महाराणा प्रताप का नाम इतिहास में वीरता के लिए अमर है।

उन्होंने अपने जीवन काल में कभी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की बल्कि मुगलों के साथ कई बार युद्ध करते हुए उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया और हराया। युद्ध में हमेशा उनके साथ उनका सबसे प्रिय घोड़ा चेतक साथ रहता था। इस अवसर पर सूबेदार मेजर, सुरेश कुमार, राम कुमार, कौशिक जयभगवान, प्रधान स

सुरेश भारद्वाज, दिलबाग, भगत, सुदेश कुमार, उमेश कुमार सुभाष, भोला साहिल कौशिक ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। संवाद

भाषण

भारत

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 10-05-2022

बिरोहड़ कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानियों को किया याद

सालहवास | आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महाराणा प्रताप की 482वीं जयंती और महान स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले के 156वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन पर अमिट छाप छोड़ी है। भूगोल प्राध्यापक पवन कुमार ने कहा कि गोखले ने महात्मा गांधी को भारत भ्रमण करने का सन्देश दिया और साथ ही उन्होंने ब्रिटिश सत्ता द्वारा किए जा रहे शोषण के खिलाफ भी आवाज उठाई।

107. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 165th Anniversary of great revolution of 1857 on 10.05.2022 and delivered keynote address on "Importance of 1857 in the Indian Freedom Struggle".

न्यूज डायरी

अमर उजाला
चरखी दादरी 11.5.22

महाविद्यालय में 1857 की क्रांति की मनाई वर्षगांठ

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की 165 वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1857 की क्रांति मेरठ से नहीं बल्कि अंबाला कैंट से शुरू हुई थी। इस क्रांति के नायक बहादुर शाह जफर, कुंवर सिंह, नाना साहेब, तांत्या टोपे, बख्त खान, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, मातादीन हेला, मंगल पांडे, उदा देवी, राव तुला राम के जीवन और संघर्ष ने आने वाले आजादी के आंदोलन की दिशा तय की। इस अवसर पर इतिहास के सहायक प्रोफेसर जितेंद्र भी उपस्थित रहे। संवाद

चरखी दादरी भास्कर 11-05-2022

1857 के महान संग्राम की 165वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम करवाया

चरखी दादरी | गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 1857 के महान संग्राम की 165वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप कहा कि 1857 की महान क्रांति मेरठ से नही बल्कि अम्बाला कैंट से शुरू हुई थी।

इस महान क्रांति का 20 वीं शताब्दी के भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन, विशेष रूप से क्रांतिकारी आन्दोलन, को जोरदार तरीके से प्रभावित किया। यह महान क्रांति भारत में पहली बार के बड़े क्षेत्र पर अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने का प्रयास करती है। इस क्रांति के नायकों बहादुरशाह जफर, कुंवरसिंह, नाना साहेब, तांत्या टोपे, बख्त खान, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, मातादीन हेला, मंगल पांडे, उदा देवी, राव तुला राम इत्यादि के जीवन और संघर्ष ने आने वाले आजादी के आन्दोलन की दिशा तय की। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर जितेन्द्र भी उपस्थित रहे।

अमर उजाला, झज्जर 11.5.2022

स्वतंत्रता संग्राम में रहा झज्जर का अहम योगदान

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत जिले के तीन कालेजों में मनाई गई क्रांति की वर्षगांठ

संवाद न्यूज एजेंसी

झज्जर, साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत जिले के तीन कॉलेजों में 1857 की क्रांति की वर्षगांठ मनाई गई। वक्ताओं ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुतियां देकर हमें आजादी दिलाई। इसमें झज्जर जिले के सेनानियों का अहम योगदान रहा है।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 1857 की महान क्रांति अंबाला कैंट से शुरू हुई थी।

शहर के राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम श्रृंखला के तहत 1857 की क्रांति में झज्जर रियासत का योगदान विषय पर मंगलवार को ऑडोटोरियम में विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ जयबीर धनखड़ मुख्य वक्ता रहे। प्राचार्य डॉ धनपत ग्रेवाल और पूर्व विद्यार्थी संगठन के अध्यक्ष रिटायर्ड कर्नल योगेंद्र सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का आयोजन इतिहास प्राध्यापक डॉ जगबीर गुलिया और सांस्कृतिक गतिविधि प्रभारी डॉ तमसा ने किया। प्रो. जयबीर धनखड़, रिटायर्ड कर्नल योगेंद्र सिंह ने भी विचार रखे। उन्होंने 1857 की क्रांति में झज्जर रियासत के साथ पटौदी, फरुखनगर, दुजाना, बावल, नारनौल और बादली क्षेत्र के योगदान पर प्रकाश डाला।

नेहरू कॉलेज के सभागार में 1857 की क्रांति के महत्व को बताते हुए वक्ता। संवाद

राजकीय महाविद्यालय में 1857 की क्रांति पर व्याख्यान देते महाविद्यालय वक्ता। संवाद

शहीदों को किया नमन

राजकीय महाविद्यालय बहू में इस अवसर पर मुख्य वक्ता व संयोजक इतिहास विभाग के प्राध्यापक नरेंद्र कुमार रहे। उन्होंने बताया कि 1857 की क्रांति की शुरुआत तो मार्च महीने में हुए स्वतंत्रता प्रेमी सैनिक मंगल पांडे के विद्रोह के बाद ही हो गया था। प्राचार्य डॉ जितेंद्र कुमार भारद्वाज ने बताया कि 1857 की क्रांति में हिंदू और मुसलमानों ने एक साथ मिलकर भाग लिया। समारोह में डॉ.मोहन कुमार, डॉ. सुनील कुमार, प्रो. कुलबीर , डॉ रविंद्र कुमार, कुमारी मोनिका, आदि स्टाफ सदस्य मौजूद रहे। संवाद

गांव बहू के राजकीय महाविद्यालय में 1857 की क्रांति पर व्याख्यान देते इतिहास के प्रोफेसर। संवाद

108. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 115th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Sukhdev Thapar on 14.05.2022 and delivered keynote address on "Life and Struggle of Great Revolutionary Sukhdev Thapar."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 15.05.2022

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी सुखदेव को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी: आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सुखदेव की 115 वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि सुखदेव ने क्रांतिकारी आंदोलन को नई ऊंचाई तक पहुंचाया था। सुखदेव ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी योगदान दिया था7 1907 में लुधियाना में जन्मे सुखदेव ने 1921 से नेशनल कालेज में भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों से मिलकर अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिए बहुत प्रयास किए।

सांडर्स की हत्या करके सुखदेव और अन्य क्रांतिकारियों ने यह बता दिया था अब भारतीय उनके जुल्म को चुपचाप नही सहेंगे। इस घटना से अंग्रेजी सरकार बौखला गई थी और बाद में लाहौर षडयंत्र मुकदमे में इनको गिरफ्तार कर लिया गया। इस अवसर पर डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, डा. रीना ने सुखदेव के बलिदान को अविस्मर्णीय बताया।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 15-05-2022

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों से लें प्रेरणा

सुखदेव की 115वीं जयंती पर कॉलेज में कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी सुखदेव की 115वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने ने अपने व्याख्यान में बताया कि सुखदेव ने क्रांतिकारी आंदोलन को नई ऊंचाई तक पहुंचाया था। सुखदेव ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी योगदान दिया था। 1907 में लुधियाना में जन्मे सुखदेव ने 1921 से नेशनल कॉलेज में भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों से मिलकर अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिए बहुत प्रयास किए। सांडर्स की हत्या करके सुखदेव और अन्य क्रांतिकारियों ने यह बता दिया था अब भारतीय उनके जुल्म को चुपचाप नही सहेंगे। इस घटना से अंग्रेजी सरकार बौखला गई थी और बाद में लाहौर षडयंत्र मुकदमे में इनको गिरफ्तार कर लिया गया। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि हमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सभी क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए और इनके बलिदानों की बदौलत ही हमें आजादी मिल पाई। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, डॉ. रीना ने सुखदेव के बलिदान को अविस्मरणीय बताया।

राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

109. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 130th Martyrdom of great freedom fighter and revolutionary Moulvi Liyaqat Ali on 18.05.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Moulvi Liyaqat Ali in the struggle of 1857."

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 19-05-2022

राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानी के 130 वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

विद्यार्थियों को देश भक्ति के लिए किया प्रेरित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 1857 के महान स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत अली के 130 वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि मौलवी लियाकत अली वो महान योद्धा थे जिन्होंने न केवल इलाहाबाद को अंग्रेजों से मुक्त करवाया बल्कि उस पर अपना शासन भी चलाया। 12 मई 1857 को 1857 के महान समर की खबर इलाहाबाद पहुंची और गुप्त रूप से अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ संघर्षरत मौलवी लियाकत अली अपने बल के साथ इलाहाबाद शहर में प्रवेश किया, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और अधिकारियों को खदेड़ दिया और शहर पर अधिकार कर लिया। मौलवी ने खुद को दिल्ली सम्राट बहादुर शाह जफर का प्रतिनिधि घोषित किया और कौसरबाग से शहर का प्रशासन अपने मुख्यालय में चलाया।

5 अक्टूबर, 1817 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के महगांव गाँव के साधारण परिवार में जन्में मौलवी लियाकत अली के शासन को समाप्त करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी के जनरल नील को भेजा और उसने 11 जून 1857 को लियाकत अली के मुख्यालय पर हमला किया। मौलवी लियाकत अली ने अंत तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन 17 जून को प्रतिकूल परिस्थितियों में युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा। मौलवी लियाकत अली 14 साल तब अंग्रेजों से छुपते रहे। बाद में, एक गुप्त सूचना पर, उन्हे ब्रिटिश सेना ने पकड़ लिया। इतिहासकार लिखते है कि मुकदमे में, उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा कि "उन्होंने केवल अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों के जुल्म से मुक्त करने के लिए हथियार उठाए थे।" मुकदमे के बाद, मौलवी लियाकत अली को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई और उन्हें अंडमान प्रत्यर्पित कर दिया गया, जहां उन्होंने 17 मई, 1892 को अंतिम सांस ली। यहां राजेश कुमार, डा. प्रदीप कुंडू, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, ओमबीर, सवीन, जितेन्द्र, डा. अजय कुमार समेत अन्य मौजूद थे।

कार्यक्रम में मौजूद कॉलेज स्टाफ और छात्राएं।

अमर उजाला, झज्जर 19.05.2022

मौलवी लियाकत के शहीदी दिवस हुआ सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 1857 के महान स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत अली के 130 वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मौलवी लियाकत अली वह महान योद्धा थे जिन्होंने न केवल इलाहाबाद को अंग्रेजों से मुक्त करवाया बल्कि उस पर अपना शासन भी चलाया। 12 मई 1857 को 1857 के महान समर की खबर इलाहाबाद पहुंची और गुप्त रूप से अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ संघर्षरत मौलवी लियाकत अली ने अपने बल के साथ इलाहाबाद शहर में प्रवेश किया, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और अधिकारियों को खदेड़ दिया और शहर पर अधिकार कर लिया। मौलवी ने खुद को दिल्ली सम्राट बहादुर शाह जफर का प्रतिनिधि घोषित किया और कौसरबाग से शहर का प्रशासन अपने मुख्यालय में चलाया।

मौलवी लियाक़त अली के बारे में जानकारी देते प्राध्यापक। संवाद

5 अक्तूबर, 1817 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के महगाँव गाँव के साधारण परिवार में जन्में मौलवी लियाकत अली के शासन को समाप्त करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी के जनरल नील को भेजा और उसने 11 जून 1857 को लियाकत अली के मुख्यालय पर हमला किया। मौलवी लियाकत अली ने अंत तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन 17 जून को प्रतिकूल परिस्थितियों में युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा। पकड़े के बाद मौलवी लियाकत अली को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई और उन्हें अंडमान प्रत्यर्पित कर दिया गया, जहां उन्होंने 17 मई, 1892 को अंतिम सांस ली। इस अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव के 105 कार्यक्रम होने पर विद्यार्थियों के इतिहास विभाग के सौजन्य से जलपान का आयोजन किया गया।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 19.05.2022

स्वतंत्रता सेनानी लियाकत अली को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गाँव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 1857 के स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत अली के 130वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि मौलवी लियाकत अली बड़े योद्धा थे। उन्होंने ना केवल इलाहाबाद को अंग्रेजों से मुक्त करवाया बल्कि उस पर अपना शासन भी किया। 12 मई 1857 को महान समर की खबर इलाहाबाद पहुंची और गुप्त रूप से अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ संघर्षरत मौलवी लियाकत अली ने अपने बल के साथ इलाहाबाद शहर में प्रवेश किया। ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और अधिकारियों को खदेड़ दिया और शहर पर अधिकार कर लिया। मौलवी ने खुद को दिल्ली सम्राट बहादुर शाह जफर का प्रतिनिधि घोषित किया और कौसरबाग से शहर का शासन अपने मुख्यालय में चलाया। अली ने 17 मई 1892 को अंतिम सांस ली। महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि डा. अमरदीप ने निरंतर महाविद्यालय में इन कार्यक्रमों का आयोजन कर गौरव बढ़ाया है। प्रोफेसर डा. सुरेंद्र सिंह, राजेश कुमार, डा. प्रदीप कुंडू, डा. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, ओमबीर, सवीन, जितेंद्र, डा. अजय कुमार, अजय सिंह, डा. राजपाल गुलिया, संदीप कुमार, प्रियंका इत्यादि भी उपस्थित रहे।

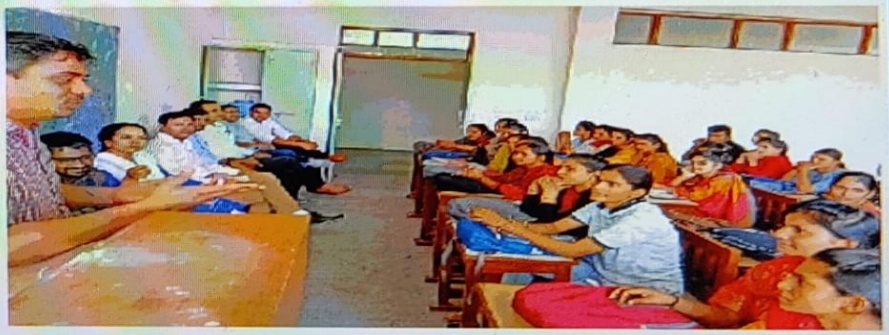

चरखी दादरी : बिरोहड़ सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.05.2022

'मौलवी लियाकत अली ने इलाहाबाद को करवाया था अंग्रेजों से मुक्त'

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करतीं प्राचार्य अनीता। संवाद

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में 1857 के महान स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत अली के 130वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मौलवी लियाकत अली वो महान योद्धा थे, जिन्होंने न केवल इलाहाबाद (अब प्रयागराज) को अंग्रेजों से मुक्त करवाया बल्कि उस पर अपना शासन भी चलाया।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी के 130वें शहीदी दिवस पर आयोजित किया गया कार्यक्रम

महाविद्यालय प्राचार्य अनीता रानी ने बताया कि 5 अक्तूबर 1817 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के महगांव में साधारण परिवार में जन्मे मौलवी लियाकत अली के शासन को समाप्त करने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने जनरल नील को भेजा और उसने 11 जून 1857 को लियाकत अली के मुख्यालय पर हमला किया। मौलवी लियाकत अली ने अंत तक बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन 17 जून को प्रतिकूल परिस्थितियों में युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा। कंपनी के अधिकारियों ने लियाकत अली पर 5 हजार रुपये का एक बड़ा इनाम घोषित किया था। मौलवी लियाकत अली 14 साल तब अंग्रेजों से छुपते रहे। बाद में एक गुप्त सूचना पर उन्हें ब्रिटिश सेना ने पकड़ लिया। इतिहासकार लिखते है कि मुकदमे में, उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषणा कि उन्होंने केवल अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों के जुल्म से मुक्त करने के लिए हथियार उठाए थे। इस मौके पर डॉ. सुरेंद्र सिंह, राजेश कुमार, डॉ. प्रदीप कुंडू, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, ओमबीर, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल गुलिया, संदीप कुमार, प्रियंका आदि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 19-05-2022

मौलवी लियाकत अली ने इलाहाबाद को अंग्रेजों से मुक्त करवाया था : डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 1857 के महान स्वतंत्रता सेनानी मौलवी लियाकत अली के 130 वें शहीदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि मौलवी लियाकत अली वो महान योद्धा थे जिन्होंने न केवल इलाहाबाद को अंग्रेजों से मुक्त करवाया बल्कि उस पर अपना शासन भी चलाया। 12 मई 1857 को 1857 के महान समर की खबर इलाहाबाद पहुंची और गुप्त रूप से अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ संघर्षरत मौलवी लियाकत अली अपने बल के साथ इलाहाबाद शहर में प्रवेश किया, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और अधिकारियों को खदेड़ दिया और शहर पर अधिकार कर लिया। इस अवसर पर राजेश कुमार, डॉ. प्रदीप कुंडू, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, ओमबीर, सवीन, जितेन्द्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल गुलिया, संदीप कुमार, प्रियंका, पूर्ण सिंह उपस्थित रहे।

110. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 104th Birth Anniversary of great freedom fighter and soldier Piru Singh Sekhawat on 19.05.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Piru Singh in First War with Pakistan, 1947."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 20-05-2022

'आज़ादी पर होने वाले पहले आघात का पीरु सिंह ने डटकर सामना किया'

कॉलेज में महान योद्धा पीरु सिंह के 104वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम

मरणोपरांत उन्हें वीरता और अदम्य शौर्य के लिए परम वीर चक्र से किया सम्मानित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान योद्धा पीरु सिंह शेखावत के 104वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि आज़ादी पर होने वाले पहले आघात का पीरु सिंह ने डटकर सामना किया और इसे असफल बनाते हुए नवोदित भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

1947 का वर्ष भारत के लिए केवल आज़ादी का जश्न का साल ही नही था, जब असंख्य देशभक्तों के बलिदानों और आंदोलनों के कारण अंग्रेजों को भारत से वापस जाना पड़ा, बल्कि यह वर्ष भारत की आज़ादी का भी इम्तिहान का वर्ष था, जब पाकिस्तान ने अपने नापाक इरादों को पूरा करने के लिए अक्टूबर 1947 में भारत पर युद्ध लाद दिया परन्तु भारतीय सेना के वीर जवानों ने इसे सफल नहीं होने दिया। 1947-48 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान एक समय ऐसा आया, जब पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर के तिथवाल सेक्टर को अपना निशाना बनाया और भारतीय सेना को किशनगंगा नदी पर बने मोर्चे से हटने के लिए मजबूर कर दिया।

18 जुलाई 1948 को 6 राजपूताना राइफ़ल्स को इस पोस्ट पर कब्ज़ा करने का काम सौंपा गया। विरोधी ऊंचाई पर मौजूद थे और भारतीय सेना नीचे। ऐसे में उनका मुकाबला करना मुश्किल था मगर राजपूताना राइफ़ल्स के कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह ने इस असंभव से लगने वाले काम को संभव बना दिया। इस जांबाज ने पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी और हथगोले का न सिर्फ़ जवाब दिया, बल्कि उसके हथियारों से लैश बंकरों को नेस्तानाबूद किया। मरणोपरांत उन्हें वीरता और अदम्य शौर्य के लिए परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 20-05-2022

महान योद्धा पीरु सिंह शेखावत का 104वां जन्मदिवस मनाया

साल्हावास | आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान योद्धा पीरु सिंह शेखावत के 104 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी पर होने वाले पहले आघात का पीरु सिंह ने डटकर सामना किया और इसे असफल बनाते हुए नवोदित भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। 1947 का वर्ष भारत के लिए केवल आजादी का जश्न का साल ही नहीं था, जब असंख्य देशभक्तों के बलिदानों और आंदोलनों के कारण अंग्रेजों को भारत से वापस जाना पड़ा, बल्कि यह वर्ष भारत की आजादी का भी इम्तिहान का वर्ष था, जब पाकिस्तान ने अपने नापाक इरादों को पूरा करने के लिए अक्टूबर 1947 में भारत पर युद्ध लाद दिया परन्तु

राजकीय कॉलेज की छात्राएं को जानकारी देते हुए।

भारतीय सेना के वीर जवानों ने इसे सफल नहीं होने दिया। इस जांबाज ने पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी और हथगोले का न सिर्फ जवाब दिया, बल्कि उसके हथियारों से लैश बंकरों को नेस्तनाबूद किया। मरणोपरांत उन्हें वीरता और अदम्य शौर्य के लिए परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

बारबार अपने शिक्षण संस्थान में बताएं प्रथम दायित्व है। बच्चे सुरक्षित रहेंगे, तभी सकते हैं। निदेशक रमेश गुलिया, सचिव बिजेंद्र कुमार ने इस बारे में बताया कि एमओ बनकर देश की भावी पीढ़ी को देश व समाज सुरक्षित रहेगा। हमें विशाल नेहरा एवं हेमंत गुलिया ने निष्पादन कला (संगीत, नृत्य, रंगमंच) सुरक्षित करने के [illegible] चित्रकला, मूर्तिकला) से पर एचडी ग्रुप [illegible] अपना आवेदन कर

अमर उजाला, झज्जर 20.5.2022

शौर्य परमवीर चक्र विजेता पीरु सिंह शेखावत के जन्मोत्सव पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

पाक की गोलीबारी का दिया जवाब, बंकर किए नेस्तनाबूत

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान योद्धा पीरु सिंह शेखावत के 104 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि आजादी पर होने वाले पहले आघात का पीरु सिंह ने डटकर सामना किया और इसे असफल बनाते हुए नवोदित भारत के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। 1947 का वर्ष भारत के लिए केवल आजादी का जश्न का साल ही नहीं था, जब असंख्य देशभक्तों के बलिदानों और आंदोलनों के कारण अंग्रेजों को भारत से वापिस जाना पड़ा।

शेखावत के जन्मोत्सव पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए प्राध्यापक डॉ अमरदीप। संवाद

बल्कि यह वर्ष भारत की आजादी का भी इम्तिहान का वर्ष था, जब पाकिस्तान ने अपने नापाक इरादों को पूरा करने के लिए अक्तूबर 1947 में भारत पर युद्ध लाद दिया। परंतु भारतीय सेना के वीर जवानों ने इसे सफल नहीं होने दिया। 1947-48 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान एक समय ऐसा आया, जब पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर के तिथवाल सेक्टर को अपना निशाना बनाया और भारतीय सेना को किशनगंगा नदी पर बने मोर्चे से हटने के लिए मजबूर कर दिया।

18 जुलाई 1948 को 6 राजपूताना राइफल्स को इस पोस्ट पर कब्जा करने का काम सौंपा गया, विरोधी ऊंचाई पर मौजूद थे और भारतीय सेना नीचे। ऐसे में उनका मुकाबला करना मुश्किल था मगर राजपूताना राइफल्स के कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह ने इस असंभव से लगने वाले काम को संभव बना दिया। इस जांबाज ने पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी और हथगोले का न सिर्फ जवाब दिया, बल्कि उसके हथियारों से लैस बंकरों को नेस्तानाबूद किया। मरणोपरांत उन्हें वीरता और अदम्य शौर्य के लिए परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

111. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 90st Death Anniversary of great freedom fighter Bipin Chandra Pal on 20.05.2022 and delivered keynote address on "Role of Bipin Chandra Pal and Rise of Indian Nationalism."

अमर उजाला, झज्जर 21.05.2022

स्वदेशी आंदोलन की नींव रख विपिन चंद्र पाल ने दिखाई ताकत

विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ. अमरदीप। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चंद्र पाल की 90 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा बिपिन चंद्र पाल ने राष्ट्रवाद और स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप प्रदान किया। 7 नवंबर 1858 को बंगाल में जन्मे बिपिन चंद्र पाल एक महान क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे। जिन्होंने एक विधवा से शादी करके अपने परिवार से भी बगावत कर ली थी। अंग्रेजी सरकार के सामने फरियादी बनकर नहीं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की नीति का प्रचलन करने वाली तिकड़ी लाल-बाल-पाल में शामिल थे। जिन्होंने बंगाल विभाजन जैसी त्रासदी के अवसर पर भी राष्ट्रवाद का तूफान खड़ा कर दिया था। स्वदेशी आंदोलन की नींव रखकर भारतीय जनता की ताकत पहली बार अंग्रेजी सरकार को बिपिन चंद्र पाल ने बंगाल में दिखाई और मैनचेस्टर या स्वदेशी की मिलों में बने पश्चिमी कपड़ों को जलाने, ब्रिटिश निर्मित सामानों का बहिष्कार करने और ब्रिटिश स्वामित्व वाले व्यवसायों व उद्योगों के तालाबंदी करने जैसे कट्टरपंथी साधनों की वकालत करके अंग्रेजों को कड़ा संदेश दिया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ अनीता रानी ने कहा कि अपने जीवन के अंतिम दिनों में इन्होंने कांग्रेस से दूरी बना ली थी और 20 मई 1932 में इनका देहांत हो गया था। परंतु भारतीय राजनीति में आजादी का आंदोलन का स्वरुप कैसा होगा उसकी आधारशिला इन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से दिखा दी थी। इस अवसर पर इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 21-05-2022

बिपिन ने स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप दिया

राजकीय कॉलेज में पाल की 90वीं पुण्यतिथि पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चन्द्र पाल की 90वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा बिपिन चन्द्र पाल ने राष्ट्रवाद और स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप प्रदान किया। 7 नवंबर 1858 को बंगाल में जन्में बिपिन चन्द्र पाल एक महान क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होंने एक विधवा से शादी करके अपने परिवार से भी बगावत कर ली थी। अंग्रेजी सरकार के सामने फरियादी बनकर बल्कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की नीति का प्रचलन करने वाली तिकड़ी लाल-बाल-पाल में शामिल थे जिन्होंने बंगाल विभाजन जैसी त्रासदी के अवसर पर भी राष्ट्रवाद का तूफान खड़ा कर दिया था। स्वदेशी आन्दोलन की नींव रखकर भारतीय जनता की ताकत पहली बार अंग्रेजी सरकार को बिपिन चन्द्र पाल ने बंगाल में दिखाई और मैनचेस्टर या स्वदेशी की मिलों में बने पश्चिमी कपड़ों को जलाने, ब्रिटिश निर्मित सामानों का बहिष्कार करने और ब्रिटिश स्वामित्व वाले व्यवसायों और उद्योगों के तालाबंदी करने जैसे कट्टरपंथी साधनों की वकालत करके अंग्रेजों को कड़ा संदेश दिया। वंदे मातरम मामले में अरबिंदो घोष के खिलाफ सबूत देने से इनकार करने के कारण बिपिन चंद्र पाल को छह महीने के लिए जेल में डाल दिया गया था। महान क्रांतिकारी नेता अरबिंदों घोष ने बिपिन चन्द्र पाल को 'राष्ट्रवाद का सबसे शक्तिशाली पैगंबर' कहा था। प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि अपने जीवन के अंतिम दिनों में इन्होंने कांग्रेस से दूरी बना ली थी और 20 मई 1932 में इनका देहांत हो गया था।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 21.5.2022

बिपिन चंद्रपाल ने राष्ट्रवाद के विचार को क्रांतिकारी रूप दिया : अमरदीप

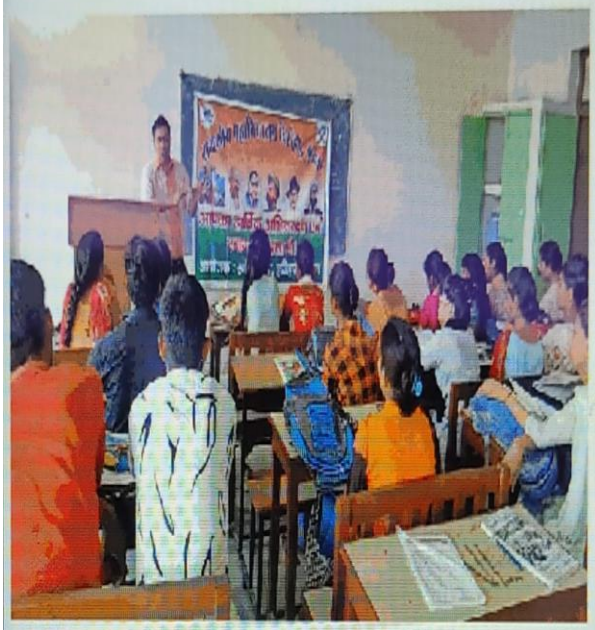

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चन्द्र पाल के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी बिपिन चंद्र पाल की 90वीं पुण्यतिथि पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा बिपिन चंद्र पाल ने राष्ट्रवाद और स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप दिया। 7 नवंबर 1858 को बंगाल में जन्मे बिपिन चंद्र पाल क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने बंगाल विभाजन जैसी त्रासदी के अवसर पर भी राष्ट्रवाद का तूफान खड़ा कर दिया था।। प्राचार्या डा. अनिता रानी ने कहा कि 20 मई 1932 में इनका देहांत हो गया।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 21-05-2022

विपिन चन्द्रपाल की 90वीं पुण्यतिथि पर हुआ सेमिनार

साल्हावास | आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी विपिन चन्द्र पाल की 90 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा विपिन चन्द्र पाल ने राष्ट्रवाद और स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप प्रदान किया। 7 नवंबर 1858 को बंगाल में जन्में विपिन चन्द्र पाल एक महान क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होंने एक विधवा से शादी करके अपने परिवार से भी बगावत कर ली थी। अंग्रेजी सरकार के सामने फरियादी बनकर बल्कि अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की नीति का प्रचलन करने वाली तिकड़ी लाल-बाल-पाल में शामिल थे जिन्होंने बंगाल विभाजन जैसी त्रासदी के अवसर पर भी राष्ट्रवाद का तूफान खड़ा कर दिया था।

जबकि 1... शाम को ... कार्रवाई क... तबादला हो ... बीएलओ की

अमर उजाला, चरखी दादरी 21.05.2022

बिपिनचंद्र पाल की 90वीं पुण्यतिथि मनाई

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ में स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी बिपिनचंद्र पाल की 90वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

इस अवसर पर सेमीनार आयोजित किया गया, जिसमें बतौर मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने शिरकत की। उन्होंने कहा बिपिनचंद्र पाल ने राष्ट्रवाद और स्वराज के विचार को क्रांतिकारी स्वरूप प्रदान किया। 7 नवंबर 1858 को बंगाल में जन्मे बिपिनचंद्र पाल एक महान क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने एक विधवा महिला से शादी करके अपने परिवार से भी बगावत कर ली थी। इतना ही नहीं वो, अंग्रेजी सरकार के सामने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की नीति की शुरुआत करने वाली लाल-बाल-पाल की तिकड़ी में शामिल थे। उन्होंने बंगाल विभाजन जैसी त्रासदी के अवसर पर भी राष्ट्रवाद का तूफान खड़ा कर दिया था और स्वदेशी आंदोलन की नींव रखकर भारतीय जनता की ताकत पहली बार अंग्रेजी सरकार को बंगाल में दिखाई।

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. अमदरीप। संवाद

पुस्तक वाचन स्पर्धा में अंशु ने मारी बाजी

चरखी दादरी। डीआरके आदर्श विद्या मंदिर में छठीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 'पुस्तक वाचन प्रतियोगिता' आयोजित की गई। इसमें अंग्रेजी अध्यापिका नीरू गुप्ता का मार्गदर्शन रहा। प्रतियोगिता में सभी विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अंत में निर्णायक मंडल ने अंशु को विजेता घोषित किया। प्रतियोगिता में रुद्रांश व पुष्प को क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान मिला। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका शर्मिला बूरा ने निभाई। इस अवसर पर कक्षा प्रभारी विजय यादव व अन्य अध्यापक भी मौजूद रहे। दादरी शिक्षा समिति व विद्यालय अध्यक्षा डॉ. विद्या गुप्ता और महासचिव एवं विद्यालय प्रबंधक राधेश्याम ऐरन ने विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी। प्राचार्या डॉ. जसबीर ग्रोवर ने विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को इस तरह की स्पर्धाओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। संवाद

डीआरके स्कूल के विजेता प्रतिभागी। संवाद

112. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 250th Birth Anniversary of great Social Reformer Rajaram Mohan Roy on 21.05.2022 and delivered keynote address on "Indian Renaissance and Contribution of Raja Ram Mohan Roy."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 22-05-2022

कॉलेज में समाज सुधारक के 250वें जन्मदिवस पर हुआ कार्यक्रम

राजाराम मोहन राय ने आधुनिक समाज व नवजागरण की नींव रखी

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान समाज सुधारक राजाराम मोहन रॉय के 250वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि राजाराम मोहन राय ने आधुनिक भारतीय समाज और नवजागरण की नींव रखी। भारतीय समाज में फैली हुई अनेक कुरीतियों पर पहली बार विमर्श प्रारंभ करने वाले राजाराम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 में बंगाल में हुआ था। सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने के कारण इन्हें घर भी छोड़ना पड़ा परंतु हिम्मत नही हारी और तत्कालीन भारत की सबसे बड़ी बुराई सती प्रथा के खिलाफ बिगुल बजा दिया जिसमें ईसाई मिशनरियों का भी उन्हें सहयोग मिला। अंग्रेजी शिक्षा को महत्व देते हुए उन्होंने इसे बदलाव का प्रतीक मानकर नवजागरण के मूल्यों को भारत में फैलाने का कार्य किया। उन्होंने पाखंड, अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा के खिलाफ ब्रह्म समाज की नींव रखी जिसने आने वाले समय में भारत में सामाजिक बदलाव की लहर पैदा की। वह अपनी संस्कृति की अच्छाई को भी बनाए रखने के पक्षधर थे जबकि रूढ़िवादी एवं जड़ रीति-रिवाजों के विरोध में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि राजा राममोहन राय सिर्फ सती प्रथा का अंत कराने वाले महान समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि एक महान दार्शनिक और विद्वान भी थे। वह जहां संस्कृत और हिंदी भाषा में दक्ष थे वहीं अंग्रेजी, ग्रीक, बांग्ला और फारसी भाषा में भी बेहद निपुण थे।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 22-05-2022

महान समाज सुधारक थे राजाराम मोहन रॉय

झज्जर | बिरोहड़ गांव के राजकीय कॉलेज के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग ने महान समाज सुधारक राजाराम मोहन रॉय के 250वें जन्मदिवस पर विशेष कार्यक्रम किया। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि राजाराम मोहन राय ने आधुनिक भारतीय समाज और नवजागरण की नींव रखी। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि राजा राममोहन रॉय महान समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि एक महान दार्शनिक और विद्वान भी थे। इस अवसर पर इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र उपस्थित रहे।

113. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 126th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Kartar Singh Sarabha on 24.05.2022 and delivered keynote address on "Indian Revolutionary Movement: Life and Struggle of Kartar Singh Sarabha."

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 25-05-2022

सराभा गांव में जन्में डॉ. करतार सिंह ने दी क्रांतिकारी आंदोलन को नई धार व चिंगारी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में 126वें जन्मदिवस के अवसर पर हुआ विशेष कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी डॉ. करतार सिंह के 126वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि करतार सिंह सराभा वो महान क्रांतिकारी थे जिनकी फोटो भगत सिंह अपनी जेब में रखते थे। 24 मई 1896 में लुधियाना के सराभा गांव में जन्में करतार सिंह ने क्रांतिकारी आंदोलन को नई धार एवं चिंगारी दी जो आगे चलकर भगत सिंह जैसे ज्वालामुखी रूप में सामने आई जिसने ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख दिया था। बचपन में पिता की मृत्यु के बाद करतार सिंह का लालन पोषण उनके दादा बदनसिंह ने किया। आगे की पढाई के लिए अपने

राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

चाचा के पास उड़ीसा और बाद में 16 वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चले गये। अमेरिका पहुंचने पर जब इनकी गहन तलाशी हुई तब इन्हें गुलाम देश का वासी होने का अहसास हुआ और इस घटना ने एक नये करतार सिंह को जन्म दिया जिसने महान क्रांतिकारी लाला हरदयाल से उनके क्रांतिकारी दल हिंदुस्तान एसोसिएशन ऑफ द पैसिफ़िक कोस्ट में शामिल होने की इच्छा जताई। इस संगठन का मकसद था अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह। तलवार से पहले कलम को हथियार बनाया गया और संगठन के विचारों को दुनियाभर में फैलाने के लिए एक पत्रिका निकाली गई। इसका नाम था गदर पत्रिका। 1 नवंबर 1913 को गदर का पहला प्रकाशन उर्दू भाषा में निकलने के बाद गदर के पंजाबी संस्करण के लिए करतार सिंह ने जिम्मेदारी दी गई जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ होने पर अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के 1857 के महान विद्रोह जैसे गदर की पुनरावर्ती करने के दुनिया भर से भारतीय प्रवासियों को भारत आने के निमंत्रण दिया। करतार सिंह ने कोलंबो होते हुए कलकत्ता पहुंचे और वहां पर इनकी मुलाकात रासबिहारी बोस से हुई। दोनों में मिलकर पूरे बंगाल और उत्तर भारत के क्रांतिकारियों को इकट्ठा करना शुरू किया। प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि करतार सिंह ने जज द्वारा सजा सुनाने से पहले कहा कि मैं चाहता हूं कि मुझे फांसी मिले और मैं एक बार फिर जन्म लूं। जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होता, तब तक मैं जन्म लेता रहूंगा। ये मेरी आखिरी ख्वाहिश है। लाहौर षड़यंत्र मुकदमे में इन्हें 19 वर्ष की आयु में फांसी की सजा सुनाई गई।

वासियों को पहले की तरह पूरा पानी मिलेगा।
स्थ्य एवं अभियंत्रिकी विभा

भी कोचिंग देते हैं और
भारतीय खिलाड़ियों को
। श्रेया की उपलब्धि पर
कर एकेडमी तक खुशी

आमजन का समस्या का
पड़ रहा है।

अमर उजाला, चरखी दादरी 25.5.2022

सराभा ने दिया आजादी के आंदोलन को नया स्वरूप

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शहीद सराभा के जन्मोत्सव पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा के 126 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि करतार सिंह सराभा वह महान क्रांतिकारी थे, जिनकी फोटो भगत सिंह अपनी जेब में रखते थे। 24 मई 1896 में लुधियाना के सराभा गांव में जन्मे करतार सिंह ने क्रांतिकारी आंदोलन को नई धार एवं चिंगारी दी जो आगे चलकर भगत सिंह जैसे ज्वालामुखी रूप में सामने आई जिसने ब्रिटिश हुकुमत को हिलाकर रख दिया था। बचपन में पिता की मृत्यु के बाद करतार सिंह का लालन पोषण उनके दादा बदन सिंह ने किया। आगे की पढ़ाई के लिए अपने चाचा के पास उड़ीसा और बाद में 16 वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चले गये। अमेरिका पहुंचने पर जब इनकी गहन तलाशी हुई तब इन्हें गुलाम देश का वासी होने का अहसास हुआ और इस घटना ने एक नए करतार सिंह को जन्म दिया जिसने महान क्रांतिकारी लाला हरदयाल से उनके क्रांतिकारी दल 'हिंदुस्तान एसोसिएशन ऑफ द पैसेफिक कोस्ट' में शामिल होने की इच्छा जताई। इस संगठन का मकसद था अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह।

इतिहास विभाग के प्राध्यापक विद्यार्थियो को जानकारी देते हुए। संवाद

तलवार से पहले कलम को हथियार बनाया गया और संगठन के विचारों को दुनिया भर में फैलाने के लिए एक पत्रिका निकाली गई। इसका नाम था 'गदर पत्रिका'। 1 नवंबर 1913 को गदर का पहला प्रकाशन उर्दू भाषा में निकलने के बाद गदर के पंजाबी संस्करण के लिए करतार सिंह ने जिम्मेदारी दी गई जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ होने पर अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के 1857 के महान विद्रोह जैसे गदर की पुनरावृत्ति करने के दुनिया भर से भारतीय प्रवासियों को भारत आने के निमंत्रण दिया। करतार सिंह कोलंबो होते हुए कलकत्ता पहुंचे और वहां पर इनकी मुलाकात रासबिहारी बोस से हुई। दोनों में मिलकर पूरे बंगाल और उत्तर भारत के क्रांतिकारियों को इकट्ठा करना शुरू किया। पार्टी के प्रचार के लिए उन्होंने हथियार इकट्ठे किए, बम बनाए और फौज में भी आजादी का प्रचार किया। विद्रोह करने के लिए तैयार करते हुए करतार सिंह और उनके साथी पकड़े गए और उन पर राजद्रोह और कत्ल का मुकदमा चलाया गया।

महाविद्यालय प्राचार्या एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता रानी ने कहा कि करतार सिंह ने जज द्वारा सजा सुनाने से पहले कहा कि मैं चाहता हूं कि मुझे फांसी मिले और मैं एक बार फिर जन्म लूं, जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होता, तब तक मैं जन्म लेता रहूंगा, ये मेरी आखिरी ख्वाहिश है''। लाहौर मुकदमे में इन्हें 19 वर्ष की आयु में फांसी की सजा सुनाई गई। इस प्रकार करतार सिंह ने भारत के आजादी के आंदोलन को क्रांतिकारी स्वरुप देते हुए नयी मिसाल पेश की जिसपर भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद जैसे असंख्य नौजवान देश पर हंसते हंसते मिट गए और देशभक्ति की कभी न बुझने वाली मशाल छोड़ गये। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

114. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 136th Birth Anniversary of great freedom fighter and revolutionary Rasbihari Bose on 25.05.2022 and delivered keynote address on "Indian Revolutionary Movement: Contribution of Rasbihari Bose."

स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य डॉ. राजेश कु
अन्य छात्राओं को भी इस तरह की प्रति
प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इस तरह
और बौद्धिक कार्य क्षमता भी बढ़ती है।

अमर उजाला, झज्जर 26.5.2022

कार्यक्रम

गदर आंदोलन से लेकर आजाद हिंद फौज तक का संगठन संभाला

रास बिहारी बोस ने ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में क्रांतिकारी रास बिहारी बोस के 136वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि रास बिहारी बोस ने वाइसराय लॉर्ड होर्डिंग पर बम विस्फोट करके पूरी हुकुमत को हिला दिया था। रास बिहारी बोस एक महान संगठनकारी थे जिन्होंने अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए गदर आंदोलन से लेकर आजाद हिंद फौज तक का संगठन संभाला।

राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम को संबोधित करते विशेषज्ञ। संवाद

25 मई 1886 में बंगाल के वर्धमान में जन्मे बोस ने फ्रांस से चिकित्सा शास्त्र और जर्मनी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद एक आरामपरस्त जीवन छोड़कर भारत की आजादी के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। 19 वर्ष की आयु में बंगाल विभाजन के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन में कूद पड़े और अरविंद घोष और जतिन मुखर्जी के नेतृत्व में युगांतर दल से भी जुड़ गए। 23 दिसम्बर 1912 को रास बिहारी बोस ने वाइसराय लॉर्ड होर्डिंग पर बम विस्फोट करके पूरी ब्रिटिश हुकुमत को हिला दिया था और क्रांतिकारी आंदोलन को एक नई ऊंचाई तक ले गए। इसके बाद उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारत में गदर आंदोलन के माध्यम से 1857 की महान क्रांति की पुनरावृत्ति करने की कोशिश की परंतु समय से पहले अंग्रेजी सरकार को इसकी भनक लगने से यह योजना सफल नहीं हो पाई। इसके बाद अंग्रेजी सरकार ने इनको हर जगह खोजा तो उन्होंने 1915 में भारत से बाहर जाकर आजादी के लिए संघर्ष करने की ठानी और जापान चले गये। जापान में जाकर न्यू एशिया नामक समाचार पत्र भी निकाला। अंग्रेजी के एसोसिएट प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा कि रास बिहारी बोस ने मार्च 1942 में टोक्यो में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की और भारत की स्वाधीनता के लिए एक सेना बनाने का प्रस्ताव भी पेश किया। इसी संदर्भ में कैप्टन मोहन सिंह और रास बिहारी बोस ने भारत की आजादी के लिए आजाद हिंद फौज का निर्माण किया, जिसे आगे चलकर सुभाष चंद्र बोस ने अपना आक्रामक नेतृत्व प्रदान किया। राजेश कुमार ने कहा कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को देश के महान एवं गुमनाम योद्धाओं की संघर्ष गाथा से देशभक्ति का संचार करना ही हमारा लक्ष्य है।

महाविद्यालय प्राचार्या एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता रानी ने कहा कि विदेश में रहकर भारत की आजादी की अलख जगाने वाले महान क्रांतिकारी रास बिहारी का 21 जनवरी 1945 में देहांत हुआ। मरणोपरांत जापानी सरकार कि ओर से रास बिहारी को जापान का तीसरा सर्वोच्च पुरस्कार आर्डर आफ द राइजिंग सन से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

115. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 87th Mahaparinirvana Diwas of great woman leader Ramabai Ambedkar on 26.05.2022 and delivered keynote address on "Symbol of Women Power: Life and Struggle of Ramabai Ambedkar."

के लिए आम बन
अंडरपास में कोई
की मांग की है
अपने आप निकल

अमर उजाला, झज्जर 27.5.2022

दूसरे
जाना
मोद,
वासी बाबरा।

'रमाबाई के त्याग ने बनाया डॉ. आंबेडकर'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता रानी की अध्यक्षता में महिला शक्ति का प्रतीक रमाबाई आंबेडकर के 87 वें महा-परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि रमाबाई के त्याग और संघर्ष शक्ति ने भीमा को डॉ. आंबेडकर बनाया। यह बात स्वयं बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने कही थी। सामान्तया सफल व्यक्तियों का गुणगान सारा विश्व करता है। परंतु हमें ऐसे सफल व्यक्तियों को सफलता के शिखर तक ले जाने वाले उन महान सहधार्मिणीयों के योगदान का वर्णन भी करना चाहिए और ऐसी ही रमाबाई आंबेडकर थीं। 7 फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणदगांव में एक बेहद गरीब परिवार में जन्मी रमाबाई के माता पिता बचपन में ही गुजर गए थे। 1906 में इनका विवाह डॉ. आंबेडकर से हुआ और उसके बाद रमाबाई डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा शक्ति बन गई। हर परिस्थिति में रमाबाई बाबा साहेब का साथ देती रहीं। बाबा साहेब वर्षों अपनी शिक्षा के लिए बाहर रहे और इस समय में लोगों की बातें सुनते हुए भी रमाबाई ने घर को संभाले रखा।

जीवन की जद्दोजहद में उनके और बाबा साहेब के पांच बच्चों में से सिर्फ यशवंत ही जीवित रहे, परंतु फिर भी रमाबाई ने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि वे खुद बाबासाहेब का मनोबल बढ़ाती रही। महाविद्यालय प्राचार्य एवं कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता रानी ने कहा कि बाबा साहेब के और इस देश के लोगों के प्रति जो समर्पण माता रमाबाई का था, उसे देखते हुए उन्हें 'त्यागवंती रमाई' का नाम दिया जाता है। 27 मई 1935 में बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के सामने उनका महापरिनिर्वाण हुआ, परंतु रमाबाई अपने पीछे विषम से विषम परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की अटूट निष्ठा की कभी न भूलने वाली दास्तां कह गई।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में रमाबाई आंबेडकर पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

116. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 58th Death Anniversary of great Freedom Fighter & India's first Prime Minister Jawaharlal Nehru and 1st Death Anniversary of great historian Professor K.C. Yadav on 27.05.2022 and delivered two special lectures on "Maker of Modern India: Jawaharlal Nehru and his Contribution", and "Creation of New History of Haryana: Role of Professor K.C. Yadav".

प्राचार्य श्रीभगवान शर्मा ने बताया धनखड़, सुषमा, सोनम महता पुष्प लिए वेबसाइट पर जानकारी ली जा कि यह

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 28.5.2022

बिरोहड़ सरकारी कालेज में पंडित जवाहर लाल नेहरू, इतिहासकार डा. यादव को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनिता रानी की अध्यक्षता में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु की 58 वीं और महान इतिहासकार प्रो. केसी यादव की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि जवाहरलाल नेहरु ने भारत की आजादी के आंदोलन को नया स्वरूप देने के साथ नए भारत का निर्माण किया। सन 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव एवं नारा देकर आजादी के संघर्ष को क्रांतिकारी आकार दिया। साथ ही इस आंदोलन में समाजवादी सिद्धांतों का समावेश करके आजादी को जन-जन से जोड़ने का कार्य किया। नेहरु ने भारत निर्माण की जिम्मेदारी उस कमजोर वक्त पर संभाली जब धर्म का अंधाधुंध दुरुपयोग हो रहा था और मानवता खतरे में पड़ी हुई थी। तब नेहरु ने भारतीय जनमानस में विश्वास और भाइचारे का संचार किया। कार्यक्रम के दौरान डा. अमरदीप ने हरियाणा इतिहास के निर्माता प्रो. केसी यादव के जीवन एवं कृतित्व पर विकास डालते हुए कहा कि आज हरियाणा का इतिहास जिस मुकाम पर पहुंचा, इसे एक अलग पहचान मिली वह प्रो. यादव के मेहनत और अटूट लग्न का परिणाम है।

सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को प्रो. केसी यादव के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

117. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st martyrdom of great freedom fighter Harikishan Singh Sarhadi on 07.06.2022 and delivered keynote address on "War of Independence and the Contribution of Harikishan Singh Sarhadi."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 08-06-2022

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

भारत के महान क्रांतिकारी हरिकिशन सिंह सरहदी का 91वां शहीदी दिवस मनाया

भास्कर न्यूज | सांघावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में भारत के महान क्रांतिकारी हरिकिशन सिंह सरहदी के 91 वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि हरिकिशन सिंह 22 साल की उम्र में देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे पर झूल गए थे। पंजाब में भगत सिंह की गिरफ़्तारी के बाद हरकिशन सिंह ने किताब के अंदर पिस्तौल छिपाकर पंजाब के गवर्नर पर जानलेवा हमला करके क्रांतिकारी आन्दोलन को नई गति प्रदान की। 1909 में उत्तर-पश्चिम के सीमांत प्रान्त के मर्दन जनपद के गल्ला ढेर नामक स्थान पर गुरुदास मल के घर में जन्मे हरिकिशन बचपन से ही अपनी दादी से क्रांतिकारियों के किस्से कहानियां सुनकर बड़े हुए। काकोरी रेल लूट की क्रांतिकारी घटना के नेता रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां हरिकिशन के आदर्श बन गए। देल्ही असेम्बली बम कांड के मुकदमे के दौरान भगत सिंह के बयानों ने हरिकिशन के युवा मन को झकझोर दिया और वे भगत सिंह को अपना गुरु मानने लगे। यह वह दौर था जब ब्रिटिश हुकूमत द्वारा पूरे देश में क्रांतिकारियों पर दमन अपने चरम पर था।

अपने विचार व्यक्त करते हुए आयोजक।

इन्हीं परिस्थितियों में क्रांति पुत्र हरिकिशन ने पंजाब के गवर्नर जियोफ्रे डी मोरमोरेंसी का वध करने का निश्चय किया। पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह 23 दिसम्बर, 1930 को होना था जिसके अध्यक्ष पंजाब गवर्नर जियोफ्रे डी मोरमोरेंसी और मुख्य वक्ता डॉ. राधाकृष्णन थे। शहीद उधम सिंह की तरह किताब के बीच के हिस्से को काटकर उसमें रिवाल्वर रखकर हरिकिशन समारोह में दाखिल हुए और जब समारोह की समाप्ति पर लोग निकलने लगे। भारतीयों को गोली न लगे इसलिए हरिकिशन ने एक कुर्सी पर खड़े होकर गवर्नर पर गोली चला दी, एक गोली गवर्नर की बांह और दूसरी पीठ पर लगी। तब तक डॉ. राधाकृष्णन गवर्नर जियोफ्रे डी मोरमोरेंसी को बचाने के लिए उनके सामने आ गए। हरिकिशन ने फिर गोली नहीं चलाई और सभा भवन से बाहर निकल गए और इसी दौरान वे पकड़े गए।

1931 को हरिकिशन ने चूमा फांसी का फंदा

इतिहास प्राध्यापक जितेन्द्र ने कहा कि लाहौर के सेशन जज ने 26 जनवरी 1931 को हरिकिशन को मृत्यु दंड दिया। जेल में मिलने आई उनकी दादी ने एक बात ही कही कि हौसले के साथ फांसी पर चढ़ना। इनके पिता गुरुदास मल को भी गिरफ्तार करके यातनाएं दी गई जिससे उनकी मृत्यु हो गई। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि हरिकिशन के राजनीतिक गुरु भगत सिंह भी उसी जेल में कैद थे। भगत सिंह से मिलने के लिए हरिकिशन अनशन पर बैठ गए। अनशन के नौवें दिन जेल अधिकारियों ने भगत सिंह को हरिकिशन की कोठरी में मिलने के लिए भेजा। पूरा परिवार ही देश की आजादी में अपना योगदान और बलिदान देने में जुटा हुआ था। 9 जून, 1931 को लाहौर की मियां वाली जेल में इन्कलाब जिंदाबाद के नारों के बीच हरिकिशन फांसी के फंदे पर झूल गए और अपने पीछे बलिदान की अनंत गाथा छोड़ गए।

अनिल अहलावत, संदीप, पंकज, राजबीर, डॉ. सुनील, गीता छिल्लर, कमलेश, नीलम, सीमा, इंदु शामिल हैं। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 8.06.2022

ations Initiative

कुर्बानी

राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी हरि किशन सिंह के 91वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

देश के लिए 22 की उम्र में हरिकिशन झूल गए थे फंदे पर

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारत के महान क्रांतिकारी हरि किशन सिंह सरहदी के 91वें शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता फौगाट की अध्यक्षता में कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि हरि किशन सिंह 22 साल की उम्र में देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे पर झूल गए थे।

उन्होंने कहा कि पंजाब में भगत सिंह की गिरफ्तारी के बाद हरकिशन सिंह ने किताब के अंदर पिस्तौल छिपाकर पंजाब के गवर्नर पर जानलेवा हमला करके क्रांतिकारी आंदोलन को नई गति प्रदान

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शहीदी दिवस पर संबोधित करते वक्ता। संवाद

की। काकोरी रेल लूट की क्रांतिकारी घटना के नेता रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खान, हरि किशन के आदर्श बन गए। यह वह दौर था जब ब्रिटिश हुकूमत के दौर में पूरे देश में क्रांतिकारियों पर दमन अपने चरम पर था। इन्हीं परिस्थितियों में क्रांतिपुत्र हरि किशन ने पंजाब के गवर्नर ज्योफ्रे डी मोरमोरेंसी का वध करने का निश्चय किया। पंजाब विश्विद्यालय का दीक्षांत समारोह 23 दिसंबर, 1930 को होना था जिसके अध्यक्ष पंजाब गवर्नर मोरमोरेंसी और मुख्य वक्ता डॉ. राधाकृष्णन थे।

शहीद ऊधम सिंह की तरह किताब के बीच के हिस्से को काटकर उसमें रिवाल्वर रखकर हरि किशन समारोह में दाखिल हुए। समारोह की समाप्ति पर लोग निकलने लगे। भारतीयों को गोली न लगे इसलिए हरि किशन ने एक कुर्सी पर खड़े होकर गवर्नर पर गोली चला दी, एक गोली गवर्नर की बांह और दूसरी पीठ पर लगी। तब तक डॉ. राधाकृष्णन, गवर्नर मोरमोरेंसी को बचाने के लिए उनके सामने आ गए। हरिकिशन ने फिर गोली नहीं चलाई और सभा भवन से बाहर निकल कर गए और इसी दौरान वे पकड़े गए।

इतिहास प्राध्यापक जितेंद्र ने कहा कि लाहौर के सेशन जज ने 26 जनवरी, 1931 को हरि किशन को मृत्यु दंड दिया। जेल में मिलने आई उनकी दादी ने एक बात ही कही कि हौसले के साथ फांसी पर चढ़ना।

उनके पिता गुरुदास मल को भी गिरफ्तार करके यातनाएं दी गई जिससे उनकी मृत्यु हो गई। डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि हरिकिशन के राजनीतिक गुरु भगत सिंह भी उसी जेल में कैद थे। भगत सिंह से मिलने के लिए हरि किशन अनशन पर बैठ गए। अनशन के नौवें दिन जेल अधिकारियों ने भगत सिंह को हरि किशन की कोठरी में मिलने के लिए भेजा। 9 जून, 1931 को लाहौर की मियां वाली जेल में इंकलाब जिंदाबाद के नारों के बीच हरिकिशन फांसी के फंदे पर झूल गए और अपने पीछे बलिदान की अनंत गाथा छोड़ गए।

118. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 86th Death Anniversary of Great Freedom fighter Abbas Tyabji on 08.06.2022 and delivered keynote address on “Abbas Tyabji and His Contribution in Indian Freedom Struggle”

अमर उजाला, झज्जर 09.06.2022

'गांधी ने बनाया था दांडी मार्च का सेनापति'

स्वतंत्रता सेनानी अब्बास तैय्यब की पुण्यतिथि पर हुआ सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी अब्बास तैय्यब की 86 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अब्बास तैय्यब की पुण्यतिथि पर सेमिनार में शामिल विद्यार्थी। संवाद

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि अब्बास तैय्यब ने आजादी के आंदोलन में स्वदेशी के प्रचार के लिए बैलगाड़ी में पूरे गुजरात में जा जाकर खादी के कपड़े बेचे। फरवरी 1854 को जन्मे तैय्यब ने इंगलैंड से 1875 में वकालत की पढ़ाई पूरी की। वे 1893 में बड़ौदा स्टेट के चीफ जस्टिस बने, फिर रिटायर होने के बाद कांग्रेस में शामिल हो गए। 1915 में महात्मा गांधी से मिले। जालियांवाला बाग नरसंहार ने इनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। 1928 में सरदार पटेल के बारदौली सत्याग्रह का खुल कर समर्थन किया। जिसमें अंग्रेजी कपड़े और सामान का बाहिष्कार किया गया। अब्बस तैय्यब ने इस दौरान अपने घर में मौजूद विदेशी सामान को एक बैलगाड़ी में लाद कर बाहर लाए और आग के हवाले कर दिया। जिसमें उनकी पत्नी और बच्चों का कीमती सामान मौजूद था। 76 वर्ष की आयु में भी 1930 के प्रसिद्ध डांडी मार्च में भाग लेने के लिए तैय्यब अपनी पुत्रियों के साथ महात्मा गांधी से मिले। महात्मा गांधी ने इनकी देशभक्ति की भावना के सामने नतमस्तक होते हुए इन्हें दांडी मार्च का सेनापति चुना। वे महात्मा गांधी की गिरफ्तारी होने पर सेना को संभालते रहे।

उनके सम्मान में गांधी और अन्य नेता उन्हे ग्रांड ओल्ड मैन ऑफ गुजरात कह कर पुकारते थे। 9 जून 1936 को जस्टिस अब्बास तैय्यब की मृत्यु 82 साल की उम्र में मसूरी में हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. अनीता फोगाट ने कहा कि भारत के राष्ट्रीय मुस्लिम घरानों में तैय्यब का घराना अग्रणी रहा है। इनके चाचा बदरुद्दीन तैय्यब कांग्रेस के संस्थापकों में से थे और उसके तीसरे अध्यक्ष बने। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर इरफान हबीब उनके पौत्र हैं, जिन्होंने भारतीय इतिहास लेखन में अद्भुत योगदान दिया है। इस अवसर पर राजेश कुमार, जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया उपस्थित रहे।

119. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 122nd Martyrdom of great freedom fighter Birsa Munda on 09.06.2022 and 27th Death Anniversary of N.G. Ranga and delivered keynote address on “Birsa Munda and N.G Ranga: Great Freedom Fighters.”

अमर उजाला, झज्जर 10.6.2022

व्याख्यान

बिरसा मुंडा व एनजी रंगा की पुण्यतिथि पर विस्तार व्याख्यान आयोजित

बिरसा मुंडा ने कुरीतियां दूर करने का किया था आह्वान

संवाद न्यूज एजेंसी

सााल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा के 122 वें शहीदी दिवस और एनजी रंगा की 27 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि बिरसा मुंडा ने आदिवासी आंदोलन की धार को तेज किया। एनजी रंगा ने आजादी के आंदोलन में सशक्त किसान आंदोलन की नींव रखी। बिरसा मुंडा का आंदोलन केवल अंग्रेजी हुकूमत के ही खिलाफ नहीं था बल्कि वह प्रत्येक आदिवासी की मूलभूत समस्याओं के निराकरण का भी आंदोलन था।

एक तरफ उन्होंने जहां ब्रिटिश साम्राज्यवाद और अवैध जंगल कानूनों का विरोध किया। वहीं दूसरी तरफ उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास और ऊंच नीच को दूर करने का आह्वान किया। सांस्कृतिक मजबूती देने के लिए इसाई धर्म का बहिष्कार करके भारत की मूल निवासियों की संस्कृति को पुनः अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दूसरे भाग में गोगिनेनी रंगा नायकुलु, जिन्हें इतिहास में एनजी रंगा भी कहा जाता है, पर चर्चा की गई। वह एक स्वतंत्रता सेनानी, सांसद और किसान नेता थे। सहकारी कृषि पर जवाहरलाल नेहरू के साथ विवाद होने के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था। एनजी रंगा ने कृषिकर लोक पार्टी के नाम से किसानों की एक पार्टी की स्थापना की थी। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि एनजी रंगा, विपिन चंद्र पाल व अन्य क्रांतिकारियों से प्रभावित थे। महिलाओं को आगे बढ़ाने का सदा समर्थन करते रहे। आंध्र प्रदेश को अलग राज्य बनाने के आंदोलन के भी वे प्रमुख नेता थे।

कॉलेज में व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

120. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 125th Birth Anniversary of great freedom fighter Ram Prasad Bismil on 15.06.2022

अमर उजाला, झज्जर 16.06.2022

काकोरी रेल डकैती के नायक थे बिस्मिल

महान क्रांतिकारी के 125वें जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में भारत के महान क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल के 125 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि राम प्रसाद बिस्मिल ने आजादी के आंदोलन को नई दिशा दी। 1897 में उतर प्रदेश के शाहजहांपुर में जन्मे बिस्मिल ने बहुत कम उम्र में ही देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपना जीवन समर्पित करने का फैसला कर लिया था और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गए थे। आजादी के संग्राम में उनका सबसे बड़ा योगदान 9 अगस्त, 1925 की काकोरी रेल डकैती था जिसने युवाओं को क्रांतिकारी रूप से प्रभावित किया। बिस्मिल और उनके सहयोगी अशफाक उल्लाह खान इस घटना के मुख्य नायक थे। इस घटना के पीछे मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों के खजाने को लूटकर उनके खिलाफ ही इसका इस्तेमाल करके उन्हें भारत से बाहर निकालना था।

राम प्रसाद बिस्मिल केजन्मदिवस पर व्याखान देते वक्ता। संवाद

क्रांतिकारियों ने 8 डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को लखनऊ रेलवे जंक्शन से ठीक पहले काकोरी स्टेशन पर रोक ब्रिटिश खजाने को लूटकर अंग्रेजी हुकूमत को सीधी चुनौती दी थी। इस घटना के बाद 40 से अधिक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया था, जबकि केवल 10 क्रांतिकारियों ने ही इस डकैती में भाग लिया था।

अंग्रेजी के एसोसिएट प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा कि आजादी के संग्राम में युवाओं ने देशभक्ति की भावना सर्वोच्च स्तर पर थी और देश के लिए जान देने से भी नहीं कतराते थे। ऐसे ही जांबाज राम प्रसाद बिस्मिल थे और आज विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि 18 महीने की कानूनी प्रक्रिया के बाद, बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान, रोशन सिंह और राजेंद्र नाथ लाहिड़ी को मौत की सजा सुनाई गई। बिस्मिल को 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई थी। इस अवसर पर राजेश कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, सवीन, जितेंद्र, ओमबीर इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 16-06-2022

राजकीय कॉलेज में क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल के 125वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम

विद्यार्थियों को राम प्रसाद बिस्मिल से प्रेरणा लेने के लिए किया प्रेरित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव जांबाज के राजकीय महाविद्यालय में भारत के महान क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल के 125वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि राम प्रसाद बिस्मिल ने आजादी के आंदोलन को नई दिशा दी। 1897 में उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में जन्में बिस्मिल ने बहुत कम उम्र में ही देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपना जीवन समर्पित करने का फैसला कर लिया था और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गए थे।

आजादी के संग्राम में उनका सबसे बड़ा योगदान 9 अगस्त, 1925 की काकोरी रेल डकैती था जिसने युवाओं को क्रांतिकारी रूप से प्रभावित किया।

राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी।

बिस्मिल और उनके सहयोगी अशफाकउल्लाह खान इस घटना के मुख्य नायक थे। इस घटना के पीछे मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों के खजाने को लूटकर उनके खिलाफ ही इसका इस्तेमाल करके उन्हें भारत से बाहर निकालना था। क्रांतिकारियों ने 8 डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को लखनऊ रेलवे जंक्शन से ठीक पहले काकोरी स्टेशन पर रोक ब्रिटिश खजाने को लूटकर अंग्रेजी हुकूमत को सीधी चुनौती दी थी। इस घटना के बाद 40 से अधिक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया था, जबकि केवल 10 क्रांतिकारियों ने ही इस डकैती में भाग लिया था।

एसोसिएट प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा कि आजादी के संग्राम में युवाओं ने देशभक्ति की भावना सर्वोच्च स्तर पर थी और देश के लिए जान देने से भी नही कतराते थे। ऐसा ही जांबाज राम प्रसाद बिस्मिल था और आज विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। प्राचार्या डॉ. अनीता फौगाट ने कहा कि 18 महीने की कानूनी प्रक्रिया के बाद, बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, रोशन सिंह और राजेंद्र नाथ लाहिड़ी को मौत की सजा सुनाई गई।

बिस्मिल को 19 दिसंबर 1927 को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई थी। इस अवसर पर राजेश कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, सवीन, जितेन्द्र, ओमबीर इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

121. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 97th Death Anniversary of great freedom fighter Chitranjan Das on 16.06.2022.

jhajjarabhitaklive.com/2022/06/16/haryana-abhitak-news-16-06-22/

Haryana Abhitak News 16/06/22

चित्तरंजन दास ने देश की आजादी के लिये अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया : डा. अमरदीप चंडीगढ़, 16 जून (अभीतक) : बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी चित्तरंजन दास की 97 पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि चित्तरंजन दास ने देश की आजादी के लिये अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया। देशबंधु के नाम से प्रसिद्ध चित्तरंजन दास का जन्म 1870 में कलकत्ता में हुआ था। इंग्लैंड में चित्तरंजन दास ने बैरिस्टर की पढाई पूरी की। 1909 में अलिपोरे बम केस में अरबिन्द घोष के शामिल होने का विरोध कर उनकी रक्षा की थी। बंगाल में 1920-1922 के बीच हुए असहयोग आन्दोलन के समय दास बंगाल के मुख्य नेताओं में से एक थे। उन्होंने ब्रिटिश कपड़ो का विरोध करते हुए उन्होंने स्वयं के यूरोपियन कपड़ो की होली जलाई और खादी कपड़े पहनने लगे थे। उन्हें भरोसा था कि सत्य और अहिंसा एवं स्वदेशी के बल पर हम आज़ादी पा सकते है और हिन्दू-मुस्लिम में एकता भी ला सकते है। असहयोग आन्दोलन की विफलता के बाद ब्रिटिश हुकूमत का विरोध केन्द्रीय और प्रांतीय विधानमंडलों में करने के लिए उन्होंने 1923 में स्वराज पार्टी की स्थापना की जिसमें मोतीलाल नेहरु ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षा अनीता फोगाट ने कहा कि चितरंजन दास के विचारो ने युवाओं को बहुत प्रभावित किया और सुभाष चन्द्र बोस जैसे महान सेनानी उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। उनके देशप्रेमी विचारो को देखते हुए उन्हें देशबंधु की संज्ञा दी गयी थी। वे भारतीय समाज से पूरी तरह जुड़े हुए थे और कविताये भी लिखते थे और अपने असंख्य लेखो और निबंधो से उन्होंने लोगो को प्रेरित किया था। 1925 में लगातार ज्यादा काम करते रहने की वजह से चित्तरंजन दास की सेहत धीरे-धीरे बिगड़ने लगी थी और 16 जून 1925 को ज्यादा बुखार होने की वजह से ही उनकी मृत्यु हो गयी थी।

122. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 265th Anniversary of Battle of Plassey on 23.06.2022 and delivered keynote address on "Importance of War of Plassey in Indian History"

एक लाख र ... रकार के
सरकारी योज ... ी कर रहे
की जाए। संव ... पर भारत

अमर उजाला, झज्जर 24.6.2022

प्लासी के युद्ध की 265 वीं वर्षगांठ मनाई

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ संगोष्ठी का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ अनीता फोगाट की अध्यक्षता में प्लासी के युद्ध की 265 वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि प्लासी का युद्ध अंग्रेजी धूर्तता एवं षडयंत्र का युद्ध था। ब्रिटिश आधिपत्य की नींव का पत्थर बनने वाले इस युद्ध ने प्रारंभ से अंग्रेजों की मक्कारी एवं मौकापरस्ती की भावना को उजागर कर दिया हालांकि भारतीयों को इसे समझने में सौ साल से भी अधिक का समय लग गया।

उन्होंने कहा कि 1757 में मुगल साम्राज्य नाममात्र के लिये बचा हुआ था और भारत में विदेशी प्रभाव जमाने के लिये फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के बीच नोंकझोंक चल रही थी। ऐसे समय मे 23 जून 1757 के प्लासी के युद्ध ने भारत का भविष्य अंग्रेजों के पक्ष में निर्धारित कर दिया। बंगाल के पूर्व नवाब अलीवर्दी खान ने अंग्रेजों की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से की थी और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी नवाब सिराजुद्दौला को इनसे दूर रहने की नसीयत भी थी, लेकिन अंग्रेज भारत पर किसी भी कीमत पर अपना राज स्थापित करना चाहते थे, इसलिए बंगाल में कठपुतली सरकार स्थापित करने के लिए उन्होंने मीर जाफर, राय दुर्लभ जैसे अनेक अवसरपरस्त अधिकारियों से षडयंत्र किया और उन्होंने गद्दी की चाहत में बंगाल को बेच दिया। एक समकालीन लेखक ने लिखा है कि बंगाल की सौदा करने में एक गधे का सौदा करने से भी कम समय लगा जो स्पष्ट करता है कि प्लासी के युद्ध केवल नाटक ही था।

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के प्रोफेसर विद्यार्थियो को जानकारी देते हुए। संवाद

कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ अनीता फोगाट ने करते हुए कहा कि इस युद्ध में बंगाल सेना के 500 सैनिक मारे गए और इतने ही जख्मी हुए तथा अंग्रेजी सेना के 23 सैनिक मारे गये और 49 सैनिक जख्मी हुए जो स्पष्ट करता है कि अंग्रेजों ने कितनी आसानी से भारत पर कब्जा करने की चाबी को प्राप्त कर लिया था और बाद में भारतीयों को इस विदेशी आधिपत्य को समाप्त करने के लिय असंख्य कुर्बानियां देनी पड़ी।

123. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 184th Birth of great freedom fighter Bankim Chandra Chaterjee on 27.06.2022 and delivered keynote address on "Bande Mataram: A Symbol of Indianness."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 28-06-2022

बंकिम चंद्र चटर्जी का 'वंदे मातरम' आजादी की ललकार बना : अमरदीप

डॉ. अमरदीप बंकिम चंद्र चटर्जी के बारे में जानकारी देते हुए।

भास्कर न्यूज | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान स्वतंत्रता सेनानी बंकिम चन्द्र चटर्जी के 184 वें जन्मदिवस के अवसर पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि बंकिम चंद्र चटर्जी राष्ट्रवाद की भावना के सबसे बड़े प्रेरणास्रोत बनकर उभरे। उनके द्वारा रचित राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' आजादी की जोरदार ललकार बन गया। अरबिंदो घोष के अनुसार बंकिम चन्द्र कहते थे कि "भारतीयता की भावना है, परन्तु अभी तक ज्ञान नहीं है। यह एक अस्पष्ट विचार है, कोई निश्चित अवधारणा या गहरी अंतर्दृष्टि नहीं है। हमें महान देशभक्त रविंद्रनाथ टैगोर बंकिम चन्द्र को अपना गुरु मानते थे। 27 जून, 1838 को बंगाल के 24 परगना जिले के कंतलपारा गांव में जन्में बंकिम चन्द्र प्रेसिडेंसी कॉलेज से पास होने वाले पहले भारतीय थे। 1859 में कलकत्ता के लेफ्टिनेंट गवर्नर ने बंकिम चंद्र चटर्जी को डिप्टी कलेक्टर के रूप में नियुक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षा एवं महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता रानी ने कहा कि बंकिम चंद्र चटर्जी साहित्यिक अभियान के माध्यम से बंगाली भाषी लोगों की बुद्धि को उत्तेजित करके बंगाल का सांस्कृतिक पुनरुद्धार करना चाहते थे। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 1872 में बंग दर्शन नामक मासिक पत्रिका निकाली। 8 अप्रैल, 1894 को उनका निधन हो गया।

124. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 121st Birth of great freedom fighter and revolutionary Rajendranath Lahiri on 28.06.2022 and delivered keynote address on "Unforgettable Hero of Revolutionary Movement: Rajendranath Lahiri"

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 29-06-2022

'राजेंद्रनाथ ने नए समाज की नींव स्थापित करने की इच्छा रखते हुए एक क्रांतिकारी और चुनौतीपूर्ण जीवन जिया'

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महान क्रांतिकारी के 121वें जन्मदिवस पर हुआ कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या डा. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी के 121वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई में, क्रांतिकारी आंदोलन में बहुत सारे युवा पुरुष और महिलाएं थीं, जो मानते थे कि सरकार के खिलाफ केवल एक सशस्त्र संघर्ष ही भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाएगा।

राजेंद्रनाथ लाहिड़ी उन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे, जिन्होंने एक नए समाज की नींव स्थापित करने की इच्छा रखते हुए एक क्रांतिकारी और चुनौतीपूर्ण जीवन जिया। उन्होंने प्रसिद्ध काकोरी षड्यंत्र मामले में अशफाक उल्लाह खान, राम प्रसाद बिस्मिल और रोशन सिंह ठाकुर के साथ स्वतंत्र भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए लड़ाई लड़ी। 29 जून 1901 को वर्तमान बांग्लादेश के पाबना क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवार में जन्म हुआ जिसमे इनके पिता क्षिति मोहन लाहिड़ी, बड़े भाई मनमथनाथ लाहिड़ी अनुशीलन समिति के सदस्य होने के कारण जेल गये थे। शिक्षा के लिए राजेन्द्रनाथ को वाराणसी भेजा गया था जहां पढ़ाई के दौरान इनकी भेट प्रसिद्ध क्रांतिकारी सचिंद्रनाथ सान्याल से हुई।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता।

लाहिड़ी में स्वतंत्रता के लिए जोश और जुनून देखकर सान्याल ने उन्हें बंगा वाणी पत्रिका का संपादक और अनुशीलन समिति की वाराणसी शाखा का समन्वयक और शस्त्र प्रभारी बनाया। प्राचार्या डा. अनीता रानी ने कहा कि काकोरी ट्रेन डकैती के लिए मुकदमा शुरू होने के बाद, लाहिड़ी को एक सह-साजिशकर्ता के रूप में पहचाना गया, और उसकी सजा को सेलुलर जेल से लखनऊ सेंट्रल जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। काकोरी मामले में उन्हें फांसी की सजा दी गई।

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 29-06-2022

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

महान क्रांतिकारी राजेन्द्र नाथ का 121वां जन्मदिवस मनाया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अनीता फोगाट की अध्यक्षता में महान क्रांतिकारी राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी के 121वें जन्मदिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई में, क्रांतिकारी आंदोलन में बहुत सारे युवा पुरुष और महिलाएं थी, जो मानते थे कि सरकार के खिलाफ केवल एक सशस्त्र संघर्ष ही भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाएगा। राजेंद्रनाथ लाहिड़ी उन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे, जिन्होंने एक नए समाज की नींव स्थापित करने की इच्छा रखते हुए एक क्रांतिकारी और चुनौतीपूर्ण जीवन जिया। उन्होंने प्रसिद्ध काकोरी षड्यंत्र मामले में अशफाकउल्लाह खान, राम प्रसाद बिस्मिल और रोशन सिंह ठाकुर के साथ स्वतंत्र

महान क्रांतिकारी के बारे में जानकारी देते हुए।

भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए लड़ाई लड़ी। 29 जून 1901 को वर्तमान बांग्लादेश के पाबना क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवार में जन्म हुआ जिसमे इनके पिता क्षिति मोहन लाहिड़ी, बड़े भाई मनमथनाथ लाहिड़ी अनुशीलन समिति के सदस्य होने के कारण जेल गए थे। शिक्षा के लिए राजेन्द्र नाथ को वाराणसी भेजा गया था जहां पढ़ाई के दौरान इनकी भेट प्रसिद्ध क्रांतिकारी सचिंद्र नाथ सान्याल से हुई। लाहिड़ी में स्वतंत्रता के लिए जोश और जुनून देखकर सान्याल ने उन्हें बंगा वाणी पत्रिका का संपादक और अनुशीलन समिति की वाराणसी शाखा का समन्वयक और शस्त्र प्रभारी बनाया। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का सदस्य बनने पर उन्होंने प्रसिद्ध काकोरी रेल डकैती में हिस्सा लिया ताकि अंग्रेजों के खजाने को लुटकर भारत को आजाद करवाया जा सके। खबरों के मुताबिक, लाहिड़ी ने ही दूसरे दर्जे के डिब्बे में चेन खींचकर ट्रेन को रोका और उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान और ठाकुर रोशन सिंह के साथ लखनऊ के पास सरकारी धन से भरी एक ट्रेन को लूट लिया। इस डकैती के बाद लाहिड़ी और अन्य क्रांतिकारी अलग-अलग जगहों पर तितर-बितर हो गए। महाविद्यालय के बर्सर डॉ. नरेंद्र सिंह ने कहा कि काकोरी की घटना के बाद, लाहिड़ी और आठ अन्य क्रांतिकारियों को बम बनाना सीखने के लिए दक्षिणेश्वरी में एक बम कारखाने में भेजा गया था।

उनके काम के दौरान एक गलती के कारण एक जोरदार विस्फोट ने पुलिस को सतर्क कर दिया और उन सभी को गिरफ्तार कर लिया। जिसे 'दक्षिणेश्वर बम केस' के नाम से जाना जाने लगा, इस कम-ज्ञात मामले के मास्टरमाइंड लाहिरी को अंडमान की सेलुलर जेल में दस साल की सजा सुनाई गई। काकोरी मामले में उन्हें फांसी की सजा दी गई। परन्तु यह अंग्रेजी हुकुमत के इतिहास में पहली बार हुआ कि 19 दिसम्बर को निश्चित की गई फांसी को 2 दिन पहले चंद्रशेखर शेखर आजाद के डर की वजह से 17 दिसंबर 1927 को लाहिड़ी को गोंडा जिला जेल, संयुक्त प्रान्त, में फांसी दे दी गई थी। राष्ट्र के लिए राजेंद्र नाथ लाहिड़ी के सर्वोच्च बलिदान को हर साल 17 दिसंबर को गोंडा जिले में लाहिड़ी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

125. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 61st Death Anniversary of great freedom fighter Sardar Baldev Singh on 29.06.2022 and delivered keynote address on "Contribution of Sardar Baldev Singh in Indian Freedom Struggle".

अमर उजाला, झज्जर 30.06.2022

सरदार बलदेव सिंह को किया याद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी सरदार बलदेव सिंह की 61 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि सरदार बलदेव सिंह स्वतंत्र भारत के प्रथम रक्षा मंत्री थे और जब देश विभाजन की त्रासदी का दंश झेल रहा था। उस समय उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर पाकिस्तान की कश्मीर घुसपैठ और युद्ध को ही रोका नहीं बल्कि करारा जवाब देते हुए इसे असफल भी बनाया। हैदराबाद रियासत को भारत में मिलाने की योजना भले ही सरदार वल्लभभाई पटेल की हो परंतु सैनिक सहायता को अचूक बनाने में सरदार बलदेव सिंह ने समुचित मार्गदर्शन दिया। जिससे ऑपरेशन पोलो सफल हो पाया। 1902 में पंजाब के रोपड़ जिले के दुम्मना गांव में जन्में बलदेव सिंह ने अपनी पढ़ाई खालसा कॉलेज, अम्बाला से पूरी की। 1942 के क्रिप्स मिशन और 1946 के केबिनेट मिशन में उन्होंने सिख समुदाय के हितों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाविद्यालय प्राचार्य डा. अनीता रानी ने कहा कि आजादी के बाद भी अंतरिम सरकार में उनको रक्षा मंत्री का प्रभार मिला था, जिसमें उन्होंने एक तरफ वह सरदार पटेल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कश्मीर में कबाइलियों के बहाने पाक घुसपैठ से उपजे संकट का मुकाबला किया, दूसरी तरफ देश भर में फैले पाकिस्तान से आए सिख हिंदू शरणार्थियों के इंतजामों में सेना को लगाकर उनकी रक्षा की। संवाद

126. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 121st Anniversary of Santhal Hul on 30.06.2022 and delivered keynote address on "Remembering the Great Event of Indian Freedom Movement: The Santhal Hul."

अमर उजाला, झज्जर 01.07.2022

हमारी माटी छोड़ो, का नारा देकर आजादी की आवाज को बुलंद किया : अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 121 वां कार्यक्रम संथाल हुल की 167 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि संथाल विद्रोह ने ''अंग्रेजों, हमारी माटी छोड़ों''का नारा देकर आजादी की आवाज को बुलंद किया था। 1942 के भारत छोड़ों आंदोलन से 85 साल पहले संथालियों ने अंग्रेजी राज को भारतीय जनमानस के हितों के लिए खतरा मानते हुए इसके खिलाफ सशक्त आंदोलन चलाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षा एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ अनीता रानी ने कहा कि हालांकि आजादी की पहली लड़ाई तो सन 1857 में मानी जाती है लेकिन झारखंड के आदिवासियों ने 1855 में ही विद्रोह का

जानकारी देते डॉ. अमरदीप। संवाद

झंडा बुलंद कर दिया था। 30 जून, 1855 को सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में विद्रोह शुरू हुआ था। इस तरह सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव, ये चारों भाई सदा के लिए भारतीय इतिहास में अपना अमिट स्थान बना गए। इस अवसर पर जितेंद्र, पवन कुमार, प्रदीप कुमार इत्यादि सहायक प्रोफेसर उपस्थित रहे।